—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

सितम्बर, 2008 वर्ष 7 अंक 07

बख़्शिश की रात

सुनाऊं तुम्हें बात इक रात की
है वो रात रहमत की बरसात की
रहे उससे पीछे महीने हज़ार
नहीं उस में रहमत का कोई शुमार
ये मिलती है आख़िर के रमज़ान में
वो भी ताक़ रातों में रमज़ान में
अगर कोई चाहे कि बख़्शिश मिले
तो इस रात में वो इबादत करे

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐	माहे मुबारक	सम्पादकीय.....3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी 5
❐	ईमान की मिठास	गुम नाम 6
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 7
❐	इमाम महदी (रह०)	मुफ़्ती असअ़द क़ासिमी 9
❐	तालीम से कौमों की बदल जाती है किसमत	फ़ीरोज़ बख़्त अह़मद..... 10
❐	हम कैसे पढ़ाएं	डा० सलामतुल्लाह 12
❐	भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फ़र नदवी 13
❐	नैतिकता से खाली शिक्षा ...	मौ० स० वाज़ेह रशीद नदवी 15
❐	सिविल सर्विसेज	एम. ह़सन अंसारी 17
❐	इस्लाम के प्रथम खलीफा	डॉ० मु० रफ़ी 18
❐	माँ (पद्य)	डॉ० अब्दुर्रब साकिब 20
❐	मख्लूक अल्लाह का कुंबा है	यूसुफ़ अह़मद कुरैशी 21
❐	परीक्षा सम्बन्धी सुझाव	शमीम इक़बाल 23
❐	कविता	ह़फ़ीज़ मेरठी 27
❐	इस्लाम और एकता	शमशेर आ़लम फतहपूरी 28
❐	काम्याबी की मास्टर की	जस्टिस सुहैल एअजाज 29
❐	देश बन्धुओं से सम्बोधन	उ़ज़्मा भोपाली 32
❐	घूस	अ़ल्लामा स० सुलैमान नदवी 35
❐	तस्वीर का दूसरा रूख	वह़ीद अशरफ़ मेरठी 36
❐	एक गीत	 36
❐	उर्दू शब्दों के उच्चारण और अर्थ	इदारा 37
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 38
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

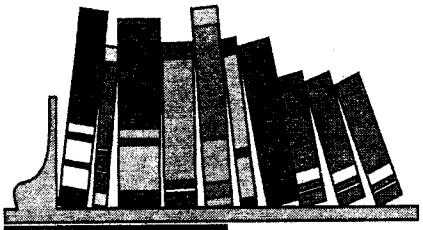

माहे मुबारक

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह के रसूल हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बड़े ही सख़ी थे लेकिन रमज़ानुल मुबारक में आप की सख़ावत और बढ़ जाती थी, हदीस में आता है "नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तमाम लोगों से ज़ियादा सख़ी थे लेकिन रमज़ान में आपकी सख़ावत तमाम दिनों से ज़ियादा होती जब आप से जिब्रील (अ़०) मुलाक़ात फ़रमाते और रमज़ान भर रात में तशरीफ़ लाते उस वक़्त आप की सख़ावत हवा से भी ज़ियादा तेज़ होती, आप से जो भी मांगा जाता आप उसे अ़ता फ़रमा देते। (बुख़ारी)

हज़रत सलमान फ़ारसी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शअ़बान के आख़िरी दिनों में सहाबा के मजमेअ़ में एक तक़रीर फ़रमाई जिस में फ़रमाया : एक बहुत ही मुबारक महीना तुम्हारे ऊपर साया किये हुए है। इस महीने में एक रात हज़ार महीनों से ज़ियादा बेहतर है दिन में उस के रोज़े फ़र्ज़ हैं और रात की इबादत में सवाब है। इसमें नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर मिलता है। यह सब्र का महीना है और सब्र का अज्र (बदला) जन्नत है, यह हमदर्दी और सुलूक का महीना है, इस में मोमिन की रोज़ी ज़ियादा होती है। जो शख़्स रोज़ेदार को इफ़्तार करा दे उस को एक रोज़े का सवाब मिलेगा। इस पर सहाबा ने दर्याफ़्त किया या रसूलल्लाह हम में से हर शख़्स के पास इतना वाफ़र (अधिक) खाना तो नहीं होता कि ख़ुद भी खाए और किसी को इफ़्तार भी कराए। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर कुछ न हो तो एक खजूर या एक घूंट पानी ही से इफ़्तार करा दो। (बुख़ारी मुस्लिम)

ग़ौर कीजिए कितने सहाबा के पास इतना ज़ियादा खाना भी नहीं होता था कि वह किसी दूसरे को इफ़्तार करा सकें मगर इस के बावजूद वह रोज़ा रखते थे, यह बात सहीह़ है कि आज से पचास साल पहले न इतने मदारिस थे न इतना दीनी लिट्रेचर न इतने तकरीरों के जलसे न दीनी दअ़वत व तब्लीग़ का इतना चलन। इन तमाम दीनी कामों और दीनदारी का चलन बढ़ा। नमाज़ी बढ़े, दाढ़ी वाले बढ़े, ज़कात अदा करने वाले बढ़े, जवान लोग भी हज्ज करने लगे लेकिन अपना ऐसा अनुमान है कि रोज़ेदार घटे, ख़ुदा करे मेरा अनुमान सहीह़ न हो।

जब अल्लाह ने रोज़ा फ़र्ज़ किया है तो रोज़ा छोड़ना कैसा? सिवाए इस के कि शरअ़ी उ़ज़्र हो। आप रोज़ा रखें अपने पास पड़ोस में पता लगाएं जो भाई ग़फ़लत से रोज़ा छोड़ रहा हो, उसे हिकमत से रोज़ा रखने पर आमादा करें, हो सकता है वह भूखे रहने की हिम्मत न होने को शरअ़ी उ़ज़्र जान रहा हो, आप उसे शरअ़ी उ़ज़्र से आगाह (सूचित) करें। अगर आप को अल्लाह ने दिया हो तो ऐसे लोगों को सहरी खाने पर बुलाएं साथ में सहरी खिलाएं रोज़े की नीयत का मसअला बताएं, बड़ी हद तक काम्याबी की उम्मीद है।

आप अपने को देखें कहीं रोज़े के सबब आप को अपने मुतअ़ल्लिक़ीन पर बहुत ग़ुस्सा तो नहीं आ रहा है, अगर आ रहा है तो इस का इलाज ज़रूरी जानें, इस नीयत से ज़ियादा तर बा वुज़ू

रहना कि इस से नफ़्स की बुराइयों से बचा जा सकता है, अक्सर बा वुज़ू रहा करें, मगर याद रहे वुज़ू रोकने की कोशिश हरगिज़ न करे, बावुज़ू रहना नेकी है और वुज़ू रोकना मकरूह है। दुरूद शरीफ़ की कसरत से भी ग़ुस्से पर क़ाबू रहता है। यह तो अपनी बात हुई, किसी दूसरे भाई को इस हाल में पाएं तो हिकमत से, उसको उस वक़्त समझाने की कोशिश करें जब वह ग़ुस्से में न हो। ग़ुस्से की हालत में समझाना कभी बड़ा नुक़सान देह (हानिकारक) साबित होता है। ग़ुस्से की हालत में तो उस के पास दुरूद पढ़ना मुफ़ीद होता है। अरबों में यह देखा कि जब दो भाइयों को लड़ते देखा तो तीसरे ने "सल्लि अलन्नबी", कहा और लड़ाई रूक गई। लेकिन यहां ख़तरा है, अगर आप ने "नबी पर दुरूद भेजने को कहा और उस ने अपनी जहालत से सख़्त जवाब दे दिया तो उस की आक़िबत ख़राब हो जाएगी, अतः यहां उस के सामने दुरूद पढ़ें उस से कुछ न कहें।

अगर आप को अल्लाह ने दे रखा है और आप पर ज़कात फ़र्ज़ है तो आप रमज़ान में ज़कात ख़र्च कर के सत्तर गुना सवाब लें, ज़कात के अलावा नेक कामों में ख़र्च करें, दीनी इल्म हासिल करने वालों पर, दीन का काम करने वालों पर, ज़रूरत मन्द मुसाफिरों पर, ग़रीब बीमारों के दवा इलाज पर ग़रज़ कि जो भी नेक काम नज़र आए और आपके लिये मुम्किन हो तो कंजूसी न करें दिल खोल कर सवाब लें।

किसी को क़ुर्आन मजीद पढ़ा देना, कुछ सूरतें ही याद करा देना, किसी की नमाज़ सहीह करा देना, नमाज़ का तरीक़ा सिखा देना, वुज़ू, ग़ुस्ल, तहारत पाकी नापाकी के मसाइल समझा देना, दीन का काम करने वाली जमाअतों का साथ देना सब नेकी के काम हैं अल्लाह तआला तौफ़ीक़ से नवाज़े।

रमज़ान में अगर तरावीह से ग़फ़लत की गई तो बड़े ही घाटे की बात होगी, तरावीह जमाअत से पढ़ने का एहतिमाम करें, सहरी के लिये तो उठना ही है अगर दो चार रकआत तहज्जुद की पढ़ कर अपने रब से अपने लिये अपने मुतअल्लिक़ीन के लिये उम्मते मुस्लिमा के लिये अपने देश के लिये, समस्त मानव जाति की भलाई के लिये दुआ करें तो नेकियां ही नेकियां कमा लेंगे।

रमज़ान के आख़िरी दहे की ताक़ रातों में इबादतों में मशगूलियात के साथ लैलतुलक़द्र पालेने की कोशिश करना अपने लिये अनिवार्य कर लें। ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो आख़िरी अशरे के एअतिकाफ़ से अपनी रूह को सुरूर बख़्शें और उसे अल्लाह को राज़ी करने का साधन बनाएं। अपनी दुआओं में मुझ पापी को भी शामिल कर लें अल्लाह आप को इस का अज्र अवश्य देगा।

कुछ लोग मेहनत मज़दूरी करके अपना और अपने बाल बच्चों का पेट पालते हैं। ऐसे लोग भी हिम्मत करें और रोज़ा क़ज़ा न करें तो अल्लाह की मदद होगी। लेकिन इस तरह के जो लोग रोज़ा रख कर मेहनत से आजिज़ हों तो रोज़ा इस नीयत के साथ छोड़ें कि मौक़अ मिलते ही छूटे हुए रोज़े रख लेंगे, मगर यह हरगिज़ न समझें कि श्रमिक (मेहनतकश) को रोज़ा मुआफ़ है, कदापि नहीं उन पर छुटे रोज़ों की अदायगी फ़र्ज़ है।

जो लोग किसी उज़्र से रोज़ा न रख पाएं तो उन को चाहिए कि दिन में रोज़े दारों के सामने न खाएं पियें। इन्शा अल्लाह इस अमल का भी सवाब मिलेगा कुछ लोगों को कहते सुना गया कि जब अल्लाह से चोरी नहीं तो बन्दों से क्या चोरी, बात यहां चोरी की नहीं माहे मुबारक के एहतिराम की है, रोज़ेदारों के एहतिराम की है। कुछ ना समझों से सुना गया उन्होंने कहा रोज़ा वह रखे जिस के घर खाना न हो, यह तो बड़ी सख़्त बात है। अल्लाह हिदायत दे।

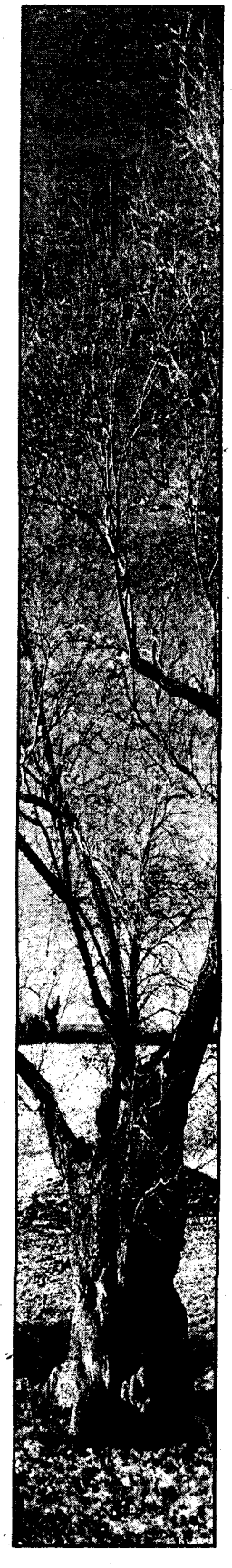

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

बन्दों की ख़िदमत और हुस्ने सुलूक :

क़ुरआने–मजीद जिस तरह ख़ुदा के मुतअ़ल्लिक सही अ़क़ीदा रखने और उस की इताअ़त व फ़र्मांबरदारी और उसकी इबादत करने की ज़ोर व ताक़त के साथ दावत व तालीम देता है, इसी तरह वह बन्दों के हक़ अदा करने और उनके मर्तबे के मुताबिक़ उन की ख़िदमत और उनके साथ हुस्ने–सुलूक (अच्छा बरताव) की भी कड़ी ताकीद करता है, बल्कि इस में बहुत सी जगहों पर तो इन दोनों मुतालबों को बयान के एक ही सिलसिले में ऐसे अन्दाज़ से ज़िक्र किया गया है जिस से मालूम होता है कि बन्दों के हक़ और उनके साथ अच्छे व्यवहार का मुतालबा भी मानो ख़ुदा की तौहीद और उस की इबादत के मुतालबे की तरह क़ुरआने–मजीद के पहले और बुनियादी मुतालबों में से एक है। जैसे कि सूरए–निसॉअ में इर्शाद है।

तर्जमा : और इबादत करो अल्लाह की, और उसके साथ किसी को शरीक न करो, और मां–बाप के साथ नेकी करो, और दूसरे रिश्तेदारों के साथ भी, (अच्छा सुलूक करो) और (इसी तरह) यतीमों के साथ भी जो अजनबी हों (जिन से कोई) रिश्ता–नाता न हो सिर्फ़ पड़ोस का सम्बन्ध हो। और उन के साथ भी (अच्छा सुलूक करो) जिन का कहीं संघ–साथ हो, और मुसाफिरों, परदेसियों के साथ, और उन के साथ जो तुम्हारे क़ब्ज़े में और तुम्हारे अधीन हों। (अन्निसा : ३६)

इस आयत में ख़ुदा की इबादत के साथ–साथ सबसे पहले मां–बाप और फिर आ़म रिश्तेदारों और हर तरह के पड़ोसियों, संघ साथ वालों, और यतीमों मिस्कीनों और परदेसियों और मातहतों के साथ हुस्ने–सुलूक और अच्छे बरताव का हुक्म दिया गया है। इसी तरह सूरए–बनी इस्राईल में इर्शाद फ़रमाया गया है।

तर्जमा : और तेरे रब ने हतमी (पक्का) हुक्म दिया है कि उस के अ़लावा तुम किसी की इबादत और बन्दगी न करो, और मां–बाप के साथ नेकी करो, अगर इनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जायें तोउन को ऊँह भी न कहो, और उन से ख़फ़गी (गुस्से) की बात न करो और उन से अदब व तमीज़ से बोलो आ़जिज़ी व नियाज़मन्दी के साथ उन की इताअ़त करो, और उनके हक़ में ख़ुदा से इस तरह दुआ करते रहो कि ऐ परवरदिगार। तू मेरे मां–बाप पर रहमत फ़रमा जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में शफ़क़त से पाला, पर्वरिश किया। (बनी इस्राईल : २३, २४)

इसी सिलसिलए बयान में एक आयत के बाद इर्शाद है :

तर्जमा : और अपने रिश्तेदारों का हक़ अदा करो, और मिस्कीनों और परदेसियों, मुसाफ़िरों को भी उनका हक़ दो, और अल्लाह का दिया हुआ माल फ़ुजूलियात में (व्यर्थ कार्यों में) मत उड़ाओ। (बनी इस्राईल : २६)

और सूर–ए–रूम में एक जगह इर्शाद फ़रमाया गया है –

तर्जमा : पस अदा करो रिश्तेदारों को उन का हक़ और (इसी तरह दो) मिस्कीनों हाजतमन्दों को और परदेसियों मुसाफिरों को (जो उन का हक है) यही (तरीका) बेहतर है उन बन्दों के लिये जो अल्लाह को चाहते हैं (यानी उस की रिज़ामन्दी के चाहने वाले हैं), और यही बन्दे फलाह (कामयाबी) पाने वाले हैं। (रूम : ३८)

ऊपर की आयतों में हमदर्दी और मदद के काबिल कमजोर तबकों (श्रेणी) में यतीमों मिस्कीनों, गुलामों, परदेसियों (विदेशी) का जिक्र आया है। और उन के साथ अच्छा सुलूक करने और उनके हक़ अदा करने और उनकी मदद व ख़िदमत (सेवा) करने की हिदायत की गयी है। बाज़ दूसरी आयतो में असीरों यानी क़ैदियों की भी इसी तरह की ख़िदमत की तरग़ीब दी गयी है। सूरए–दहर में जन्नतियों की उन सिफ़तों और अमलों को बयान करते हुए जिन के बदले में उन को जन्नत और जन्नत की नेमतें मिलेंगी, इर्शाद फ़रमाया गया है।

तर्जमा : और वे अल्लाह के बन्दे खाना खिलाते हैं, अल्लाह की मुहब्बत की

वजह से मिस्कीनों को और यतीमों को और क़ैदियों को। (दहर : ८)

इन कमज़ोर तबकों के साथ अच्छा सुलूक करने के सिलसिले में कुरआने–मजीद का एक हुक्म यह भी है कि जो बच्चा बाप की सरपरस्ती (संरक्षण) से महरूम (वंचित) हो कर यतीम हो गया हो, उस से शफ़क़त (दया–कृपा) का बरताव करो और जो कोई बेचारा लाचारी नादारी से मजबूर होकर तुम से सुवाल करे उस के साथ रहम दिली और नर्मी का मुआमला करो, उस को कभी न झिड़को। इर्शाद है :

तर्जमा : पस जो यतीम हो उसे मत डान्टो, मत दबाओ, और बेचारे मांगने वाले को मत झिड़को। (सूर–ए–जुहा)

यहां यह बात ध्यान देने के लायक़ है कि ऊपर ज़िक्र की गयी आयतों में मां–बाप और दूसरे रिश्तेदारों और यतीमों व मिस्कीनों और मुसाफ़िरों व साइलों के साथ हुस्ने–सुलूक और उन की मदद व ख़िदमत करने की जो तालीम दी गयी है, उस में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई भेद व फ़र्क़ नहीं है। मानो अगर किसी मुसलमान के मां–बाप या रिश्तेदार मुसलमान न हों, या उस के सामने कोई ग़ैर मुसलमान यतीम (अनाथ) या मिस्कीन या साइल या ग़ैर मुसलमान ज़रूरतमन्द परदेसी आये तो कुरआने मजीद का हुक्म उस मुसलमान को उन सब ग़ैर मुसलमानों के साथ भी अच्छा सुलूक करने का और अपनी हैसियत के मुताबिक़ उन की ख़िदमत करने का है।

ख़ास तौर पर मां बाप के बारे में कुरआने मजीद में यहां तक फर्माया गया है कि अगर किसी के मां–बाप, मान लो मुशरिक हों और वे अपनी मुसलमान औलाद पर ज़ोर डालें कि वे भी इस्लाम और तौहीद को छोड़ कर कुफ़्र व शिर्क इख़्तियार कर ले, तो मुसलमान औलाद का फ़र्ज़ है कि उन की यह बात तो न माने, यानी उन के कहने से इस्लाम और तौहीद को तो न छोड़े, लेकिन दुन्या में उन के साथ हुस्ने–सुलूक और अच्छा बरताव ही करता रहे। सूरए–लुक़मान में औलाद पर वालिदैन (मां–बाप) का हक़ बयान करते हुए इर्शाद फ़र्माया गया है –

तर्जमा : और अगर तुम्हारे मां–बाप तुम पर ज़ोर डालें कि तमु मेरे साथ (यानी अल्लाह के साथ) किसी ऐसी हस्ती को शरीक करो जिस को शरीक ठहराने का तुम्हारे पास कोई तर्क नहीं (जबकि वह बिलकुल बेहकीकत और सिर्फ़ फ़र्ज़ी और वहमी है जैसे कि मुशरिकों के सारे माबूदों का हाल है) तो तुम उन की यह बात मत मानो। (लेकिन इस के बावजूद) तुम दुन्या में उन के साथ अच्छा मुआमला और व्यवहार बराबर करते रहो (और उन की सेवा करते रहो)।

(पृष्ठ ११ का शेष)

उस की नजर इस के आगे अस्ल दुन्या तक नहीं पहुंचती। नक्शे के अलग अलग रंग, देश के धरातल की बनावट, ढाल जलडमरू मध्य, नदियों के बजाय महज़ नक्शा देखने की आदत, भूगोल के बौद्धिक अध्यात्म की आत्मा को मार देती है।

मानचित्र के महत्व और उसका सही अर्थ स्पष्ट करने के लिये बच्चों से अपने आस पास का निरीक्षण करवाना चाहिए। जिसमें न सिर्फ़ वह ज़मीन की बनावट और ऊंचाई–नीचाई नोट करें बल्कि यह भी नापें कि विभिन्न स्थानों के बीच की दूरी क्या है। और वह एक दूसरे से कितनी ऊंची या नीची हैं। फिर इन निरीक्षणों और पैमानों के आधार पर नक्शे बनवाने चाहिए। इस प्रकार बच्चे व्यवहारिक रूप से समझ जायेंगे कि नक्शे के विभिन्न रंगों, लकीरों और शब्दों के क्या अर्थ होते हैं। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अन्सारी

ईमान की मिठास

गुम नाम

सच ये है ईमान की
पावे वही मिठास
जिस के मन में जान लो
तीन गुणों की बास
अल्लाह और रसूल से
प्रेम कुछ ऐसा होए
बाक़ी समस्त सृष्टि से
प्रेम न वैसा होए
प्रेम ग़ैर से करे नहीं
करे तो बस लिल्लाह
कुफ़्र कभी वो करे नहीं
समक्ष रहे अल्लाह
घृणा करे जो कुफ़्र से
जलती आग समान
जो ऐसा गुणवान हो
उस में है ईमान
मोमिन की पहचान है
करे नबी से प्रेम
पुत्र पिता और लोक से
बढ़ा हो उन का प्रेम
धन, कुल और यह लोग सब
प्रेम न इन से होए
प्रेम जो इन से होए तो
नबी से घट कर होए

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

हुजूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम का अपनी उम्मत के लिये दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत से डरना

हज़रत अम्र (र०) बिन औफ़ (र०) अन्सारी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदः (र०) बिन जर्राह को जिज़्यः लेने के लिए बहरैन भेजा। वह बहरैन से माल लेकर आये। अन्सार ने सुना कि हज़रत अबू उबैदः (र०) आ गये। तो वह सुबह की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हो गये। जब आप नमाज़ से फारिग हुए तो वह सामने आये। आप उमको देखकर मुस्कराये और फरमाया, मेरा ख्याल है कि तुमने सुन लिया, अबू उबैदः (र०) बहरैन से कुछ लाये हैं। उन्होंने कहा, जी हां। आपने फरमाया मुबारक हो और खुशी की उम्मीद रखो। खुदा की क़सम मैं तुम्हारे लिए फ़क्र को नहीं डरता। लेकिन मुझे ख़ौफ़ है कि तुम्हारे लिये भी दुनिया उसी तरह न फैला दी जाये जैसे तुमसे अगलों के लिये फैलाई गयी थी। तो जैसे उनको हलाक किया, तुमको भी कहीं न हलाक कर दे। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू सअीद (र०) खुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ रखते थे और हम सब आपके गिर्द बैठे थें। आपने फ़रमाया, मुझे यह डर रहता है कि कहीं मेरे बाद तुम पर दुनिया की आराइश और उसकी ज़ीनत खोल न दी जाये। (बुख़ारी–मुस्लिम)

और उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया दुनिया सरसब्ज़ और मीठी है। अल्लाह तआला तुमको इसमें जानशीन बनायेगा। फिर वह देखेगा कि तुम क्या करते हो, तो दुनिया और औरतों से डरना। (मुस्लिम)

आं हज़रत (सल्ल०) की दुआ

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! अस्ली ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है। (मुस्लिम–बुखारी)

मय्यत के साथ तीन चीजें जाती हैं

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मय्यत के साथ तीन चीजें जाती हैं। उसका माल, उसके घर वाले। और उसके आमाल। दो चीजें पलट आती हैं। १. घर वाले और २. माल पलट आते हैं। ३ अमल बाकी रह जाता है। (मुस्लिम–बुखारी)

दोजख-जन्नत का मन्जर देखकर दुनिया की मुसीबत व राहत भूल जाना

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, कियामत के दिन दुनिया के सबसे ज़ियादः आराम पाने वाले को लाया जायेगा, जो दोज़खी होगा। उसको आग में एक ग़ोता दिया जायेगा फिर कहा जायेगा कि ऐ इब्नि आदम! क्या तूने कभी कोई भलाई देखी? क्या किसी भलाई का तेरे पास कभी गुज़र हुआ? वह कहेगा, ऐ परवरदिगार! कभी नहीं। फिर दुनिया के सबसे ज़ियादः मुसीबत ज़दा को लाया जायेगा, जो जन्नती होगा। उसको जन्नत में एक ग़ोता देकर कहा जायेगा, दुनिया में क्या कभी तुझ पर तक़लीफ़ की कोई साअ़त गुज़री? वह कहेगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं देखी, और न किसी मुसीबत से दो चार हुआ। (मुस्लिम)

आख़िरत के मुकाबले में दुनिया की बेहक़ीक़ती

हज़रत मुस्तौरिद इब्नि शद्दाद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आख़िरत के मुकाबले में दुनिया को ऐसी ही निस्बत है जैसे समन्दर में कोई अपनी उंगली डाले और देखे कि इस पर क्या तरी लगी रह गयी?

अल्लाह के नज़दीक दुनिया की हक़ीक़त

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का एक बाज़ार से गुज़र हुआ, और लोग आपके दायें–बायें थे। एक मरी हुई कनकटी बकरी के पास से गुज़रे, उसके कान पकड़ के उठाया और फ़रमाया, तुम इसको एक दिरहम के बदले लेना चाहते

हो? लोगों ने अर्ज़ किया कि हम इसको किसी चीज़ के बदले लेना नहीं चाहते। हम इसको लेकर क्या करेंगे? आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारी ख्वाहिश है कि यह तुमको मिल जाये? उन्होंने अर्ज़ किया, वल्लाह! अगर यह ज़िन्दा भी होती तो ऐबदार होती; यह तो मरी हुई है। आपने फ़रमाया, जितनी हकीर तुम्हारी नजर में यह है, खुदा की नजर में दुनिया इससे कहीं जियादः हकीर है। (मुस्लिम)

दौलत के साथ सुलूक

हजरत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना की पथरीली जगह में चल रहा था। उहुद पहाड़ सामने आया। आपने फ़रमाया, ऐ अबू ज़र (र०)। मैंने अर्ज़ किया, हाज़िर हूं या रसूलल्लाह ! फ़रमाया, मुझे यह पसन्द नहीं कि मेरे पास उहुद के बराबर सोना हो, और मुझ पर तीन दिन गुज़र जायें, और मेरे पास उससे एक दीनार भी बच रहे। हां, बस इतना कि मैं क़र्ज़ के लिये रोक लूं, या यह कि उसको अल्लाह के बन्दों में तक़सीम करूं इस तरह, और इस तरह अपने दायें–बायें और पीछे इशारा फ़रमाया। फिर आगे चले और फ़रमाया जो आज बड़े दौलतमन्द हैं, कल कियामत के दिन बे–बिज़ाअत होंगे, मगर वही जो माल को इस तरह तक्सीम करें, फिर अपने दायें बायें और पीछे इशारा फ़रमाया, और फ़रमाया कि ऐसे लोग बहुत कम हैं। फिर आपने इर्शाद फ़रमाया, तुम इसी जगह रहना, जब तक मैं न आ जाऊं यहां से न हटना। फिर आप रात की तारीकी में कहीं तशरीफ ले गये। यहां तक कि नज़रों से ओट हो गये। इतने में मैंने एक बलन्द आवाज़ सुनी, मुझे खौफ़ हुआ कि कोई नयी बात तो नहीं पेश आयी। मैंने आपके पास जाने का इरादा कर लिया, मगर आपकी बात याद आ गयी कि यहां से न हटना। इस ख्याल के आते ही मैं ठहर गया। थोड़ी देर में आप तशरीफ़ ले आये। अर्ज़ किया कि मैंने एक आवाज़ सुनी थी, जिससे मैं डर गया था, और पूरा किस्सा कह सुनाया। आपने फ़रमाया, तुमने सुना था? मैंने अर्ज किया, जी हां। फ़रमाया, वह जिबरील (अ०) थे। मुझे ख़बर दी है कि तुम्हारी उम्मत में अगर कोई इस हाल पर मर जाये कि उसने शिर्क न किया हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने कहा अगरचि वह बदकार हो और चोर हो? फ़रमाया, अगरचि वह बदकार या चोर हो। (बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगर मेरे पास उहुद के पहाड़ के बराबर सोना हो तो मैं इस हालत पर तीन रातें गुज़ारना पसन्द नहीं करता। हां सिर्फ़ इतना कि कर्ज़ के काम आ सके। (बुख़ारी–मुस्लिम)

आदमी अपने से कम को देखे

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अपने से कम दर्जा वालों को देखो, बड़े दर्जे वालों को न देखो। इसका नतीजा यह होगा कि तुम अल्लाह की निअ़मत को हकीर न समझोगे। (मुस्लिम)

रुपया पैसा का बन्दः

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, दीनार व दिरहम का बन्दः और शाल–दोशाला का परस्तार हलाक हो। अगर इसको यह चीजें दे दी जायें तो राज़ी होता है, वरना नाराज़ हो जाता है। (बुख़ारी)

अहले सुफ्फः की हालत

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने अहले सुफ्फः के सत्तर आदमियों को देखा। उनमें से कोई ऐसा न था कि उसके पास ओढ़ने बांधने के लिये पूरा कपड़ा होता। किसी के पास सिर्फ़ चादर होती थी, किसी के पास सिर्फ़ तहबन्द जिसको वह अपनी गर्दनों में बांध लेते थे। वह किसी के निस्फ़ पिंडली तक पहुंचता और बाज़ के टखनों तक वह अपने हाथ से पकड़े रहते थे कि कोई बरहना न देखे। (बुख़ारी)

दुनिया मोमिन के लिये कैदखाना है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा शाना पकड़कर फ़रमाया, मोमिन के लिऐ दुनिया कैद खाना है और काफ़िर के लिये बाग़ो–बहार है। (मुस्लिम)

दुनिया में मुसाफ़िरों की सी ज़िन्दगी गुजारो

हज़रत इब्नि उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा शाना पकड़कर फ़रमाया, दुनिया में इस तरह रहो जैसे एक मुसाफ़िर या राहगीर। और हज़रत इब्नि उमर (र०) अक्सर फ़रमाते कि शाम हो तो सुबह का इन्तिजार न करो, सुबह हो तो शाम का इन्तिजार न करो। मर्ज़ से पहले सिहत की और मौत से पहले ज़िन्दगी को गनीमत समझो। (बुखारी)

इमाम महदी रहमतुल्लाहि अ़लैहि

मुफ़्ती असअ़द क़ासिमी

नसब व ख़ान्दान

इमाम महदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नस्ल यअ़नी अहले बैत के खान्दान से होंगे चुनांचि सुनने अबी दाऊद, तिर्मिज़ी, मुस्तरक हाकिम और मुसन्नफ अबी शैबा की तक़रीबन पन्द्रह सहीह़ रिवायतों में यह मज़मून मज़कूर है, उनके मुतफ़र्रिक़ टुकड़ों के तजर्मे हम नीचे नक़्ल करते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत महदी के बारे में फ़रमाया :

- मेरे अहले बैत में से एक शख़्स होगा।
- महदी मेरे ख़ान्दान से हैं।
- बनू हाशिम में से एक शख़्स निकलेगा।
- महदी मेरे ख़ान्दान से और फ़ातिमा की औलाद से होगा।
- महदी ह़ज़रते हसन के खान्दान से होंगे।

ह़ज़रत अ़ली ने अपने बेटे ह़ज़रत हसन को देखते हुए कहा कि मेरा यह बेटा सरदार है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसे सय्यिद के लक़ब से याद किया है। इस की औलाद में एक शख़्स पैदा होगा उस का नाम तुम्हारे नबी के नाम की तरह (मुह़म्मद) होगा, यह आ़दात व अख़लाक़ और सूरत व शक्ल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुशाबेह होंगे।

नाम व वल्दीयत : सुनने तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, मुस्तदरक हाकिम और मुसन्नफ़ इब्नि अबी शैबा की सहीह़ रिवायतों में ह़ज़रत महदी के बारे में जुमले इस तरह मिलते हैं युवाती इस्मुहू इस्मी (उन का नाम मेरे नाम पर होगा)

"युवाती इस्मुहू इस्मी व इस्मु अबीहि इस्म अबी" (उन का नाम मेरे नाम पर होगा और उनके वालिद का नाम मेरे वालिद के नाम पर होगा।)

ह़िल्या : ह़ज़रत महदी का ह़िल्या यूं बयान किया गया है :

उन की नाक बुलन्द व सुत्वां और चेहरा रौशन होगा। (मुस्तदरक हाकिम)

पेशानी कुशादा, नाक बुलन्द और सुत्वां होगी। (अबू दाऊद)

वतन : वह शख़्स मदीना मुनव्वरा का होगा। (सुनने अबी दाऊद)

ख़िलाफ़त की बैअ़त : सुनने अबी दाऊद में लिखा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

एक ख़लीफ़ा की मौत पर इख़्तिलाफ़ होगा, ख़ान्दाने बनी हाशिम का एक शख़्स (यह देखकर) मदीने से मक्का चला जाएगा (इस ख़्याल से कि ऐसा न हो कि लोग मुझे ख़लीफ़ा बना दें) मक्के के लोग उन को ढून्ढ कर कअ़बे के पास लाएंगे और फिर ह़जरे अस्वद और मकामे इब्राहीम के बीच बैठा कर उनके हाथ पर बैअ़त करेंगे। (इस तरह़ वह मुसलमानों के ख़लीफ़ा बन जाएंगे।)

फ़ुतूह़ात : रिवायत में शाम, लबनान, इटली, कुस्तुनतीनिया का फ़त्ह़ करना फिर इन्हीं के ज़माने में दज्जाल के निकलने और उससे मुकाबले का जिक्र आता है।

ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान से उतरना :

मुसनद अह़मद, तबरानी, हाकिम में रिवायत है कि :

उसमान इबिन अल–आस कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त आसमान से उतरेंगे, मुसलमानों का अमीर (ह़ज़रत महदी) उन से कहेगा कि ऐ रूहुल्लाह आगे आकर नमाज़ पढाइये वह जवाब देंगे कि इस उम्मत के लोग खुद ही एक दूसरे के इमाम हैं तब मुसलमानों का अमीर (ह़ज़रत महदी) आगे बढ़कर नमाज पढ़ाएगा, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हजरत ईसा अलैहिस्सलाम अपना ह़रबा लेकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे, उस के साथी शिकस्त खा कर भागें गे मगर आज उन्हें कहीं पनाह न मिलेगी, यहां तक कि दरख़्त और पत्थर भी छुपे हुओं को क़त्ल के लिये बुलाएंगे।

इस मज़मून की बहुत सी अह़ादीस हैं हम ने यहां इतने ही पर इक्तिफ़ा किया। दज्जा. के क़त्ल के बाद यहां फुतूह़ात का सिलसिला चलता रहेगा यहां तक कि सारे आ़लम में इस्लाम फैल जाएगा सारे ईसाई ह़ज़रत ईसा (अ़०) से बैअ़त कर के इस्लाम में दाख़िल हो जाएंगे इस लिये कि ह़ज़रत ईसा (अ़०) इस्लामी शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करेंगे।

वफ़ात: सात या आठ या नौ साल हुकूमत करने के बाद ह़ज़रत महदी (रह़०) का इन्तिक़ाल हो जाएगा। ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे और मुसलमान लोग दफ़न करेंगे।

ह़ज़रत महदी (रह़०) की वफ़ात के बाद सारे इन्तिज़ामात ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ में आ जाएंगे। उन का क़ियाम दुन्या में चालीस साल रहेगा। इसी दौरान याजूज माजूज के निकलने और उनकी तबाही का वाक़िआ़ पेश आएगा। ह़ज़रत ईसा (अ़०) ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़०) की क़ौम में शादी करेंगे और साह़िबे औलाद होंगे। वह ह़ज्ज व उम्रः भी करेंगे आखिर में मक़अ़द नामी शख़्स को ख़लीफ़ा बनाकर इन्तिक़ाल फ़रमाएंगे और आप को रौज़–ए–नबवी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बराबर दफ़्न किया जाएगा,

इन वाज़ेह़ ख़बरों से मिर्ज़ा गुलाम अह़मद क़ादियानी की ग़लत बयानी खुल कर सामने आ जाती है और साबित हो जाता है कि क़ादियानियत का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक़ नही।

तालीम से क़ौमों की बदल जाती है क़िस्मत

फ़ीरोज़ बख़्त अहमद

यह बड़ी हैरानी की बात है कि बावजूद इस के कि तालीम का रिवाज आम हुआ है आज भी भारत के मुसलमानों में बहुत से लोग अपने बच्चों को प्राइमरी स्कूलों में दाख़िला दिलवाने से कतराते हैं। उनकी इस सोच के कारण हमारे समाज में निरक्षरता और पस्ती का दौर दौरः है।

लेखक ने एक सर्वे किया और पाया कि आज भी हमारे यहां एक बहुत बड़ा तब्कः ऐसा है कि जिस पर बार–बार कहने का भी कोई असर नही होता, वहां मां–बाप को इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं कि उन के बच्चे प्राइमरी स्कूलों में जा रहे हैं या नहीं। संरक्षकों के एक बड़े तब्कः की आज भी यह सोच है कि अगर बच्चों को स्कूल में डाल दिया जाए तो वह उनके लिये एक बोझ साबित होगा। इसके मुकाबले वह इस बात को कहीं बेहतर जानते हैं कि अगर बच्चों को किसी काम पर लगा दिया जाये तो वह चार पैसे की आमदनी का जरियः बनेगा। उन का विचार यह होता है कि स्कूल में डालेंगे तो खर्चा बढ़ेगा और अगर किसी फैक्ट्री, ढाबा, दुकान आदि पर लगा दिया जाये तो कम से कम वह बच्चा महीने में कुछ तो कमा कर लायेगा ही। यह एक बड़ी गलत सोच है। यही कारण है कि आज हमारे यहां न तो शिक्षा गुणात्मक है और न ही बेहतर व बरतर शिक्षार्थी। हमारा ड्राप आउट रेट भी बहुत बढ़ चुका है। जब तक हम लोग शिक्षा का महत्व नहीं समझेंगे हमारा तिरस्कार किया जाता रहेगा। हालांकि शिक्षित होने के बाद भी हमारे साथ ज्यादतियों की कमी नहीं होती, मगर कम से कम अपना बचाव करने की कोशिश तो कर लेते हैं। इस के विपरीत अगर हम एक मिसाल आन्ध्र प्रदेश के दूरस्थ जंगलों में बसी एक ऐसी बस्ती को लें कि जहां शिक्षा का चलन न होते हुए भी वहां के पिछड़े तबकात के लोगों ने एक मैगसेसे एवार्ड प्राप्त महिला अनीता राम पाल के कहने पर अपने बच्चों के दाखिले अपने घर के पास के प्राइमरी स्कूल में करवा दिया तो शायद आप को यकीन न आये कि इन बच्चों ने सफलता की कौन सी सीमाओं को पार कर लिया। हालांकि इन प्राइमरी स्कूलों की यह हालत थी कि इन में कभी तो टीचर होते थे तो कभी नहीं। यहां तक कि कई स्कूल तो ऐसे थे कि जहां छतें भी नही थीं और कक्षायें भी नहीं। एक ही जगह कई क्लासेज के बच्चे बैठते थे। मगर इन बच्चों के मां–बाप ने उन्हें वहां से उठाया नहीं। और अपना पेट काट कर उन्हें पढ़ाते रहे। उन्हें इन बेकार से स्कूलों में भी जबरदस्त विश्वास था। बावजूद इस के कि यह सरकारी स्कूल हद दर्जे और गैर स्टैंडर्ड थे, यह बच्चे अपने अपने स्कूलों को जकड़े रहे। छोड़ कर नहीं गये।

कुछ मां–बाप तो ऐसे थे कि जिन की मासिक कमाई मात्र चार सौ रूपया तक थी। उन्होंने भी अपने बच्चों को पास के प्राइमरी स्कूलों में भेजा। यही नहीं, उन बच्चों के यूनीफार्म, किताबों, पेंसिल, कापियों तक का भी खर्चा उठाया। यह काम वह स्वयं एक समय फाकः कर के और एक वक्त खाने के पैसे बचाकर किया करते थे। इन तमाम कुरबानियों का नतीजा खातिर ख्वाह रंग लाया। इनमें से कुछ ने इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट से डिग्री पाई और आठ लाख रूपये मासिक वेतन का आफर भी उन्हें अपने शैक्षिक अवधि के अन्तिम वर्ष में मिल गया। इन्हीं पिछड़ी बस्तियों की घूल मिट्टी में कला बाजियां खाने वाले बच्चों में से कई बड़े इन्जीनियर बन गये तो कुछ ने अपने अपने मैदान में विशिष्ट रोल अदा किया।

यह तमाम बातें इस बात को परिलक्षित करती हैं कि शिक्षा का साथ हमेशा फायदा पहुंचाता है और शिक्षा के मैदान में की गयी मेहनत कभी भी रायगां नही जाती। क्या खूब कहा है हाली ने – (दूसरी लाइन बदलकर)

जहां तक देखिये तालीम की फरमारवाई है,

यही वो इल्म है जिस से खुदा तक भी रसाई है।

इल्म अल्लाह की अमानत है। और अल्लाह ने आदि काल ही से आदम को "इस्म आजम" से "इल्मुल असमा" का सबक दिया था और इन की हकीकत और फायदा को मालूम करने की शक्ति

अता कर दी गयी, (सक्षम बना दिया गया)। यह इसी क्षमता व शक्ति के कारण हैं कि आज इन्सान चांद पर कदम रख चुका है, सितारों पर कमन्द डाल रहा है, समुद्रों की तह चाट रहा है। तिनके को तोड़ कर दरख्त की ऊर्जा (इनर्जी) पैदा कर रहा है। और दिल के बुझते चिराग को भी फिर से उजागर करने की कोशिश कर रहा है।

पवित्र कुरआन की पहली वही न याद रखने की सजा हम आज फिलस्तीन, ईराक और अफगानिस्तान और इस्लामी दुनिया के हर कोने में भोग रहे हैं। आह हम मुसलमान कोरे जाहिल कहला रहे हैं। वहशत व दहशत के कारीगर समझे जा रहे हैं।

यहसब इस कारण हो रहा है कि हमने अपने नबी सल्ल० के इरशादात को भुला दिया। आप सल्ल० ने फरमाया था कि आप के दीन की जड़ अक्ल है और आप का हथियार इल्म है। आज इल्म पाश्चात सभ्यता के बुतकदों में उन का हथियार बन गया है। आज हम इल्म से वंचित और बेफ़ैज़ (अलाभान्वित) तथा बिखरे हुए, ज़िल्लत की मौत मर रहे हैं।

हिन्द के मुसलमानों में जदीद तालीमी शऊर (चेतना) दरअसल सर सैयद अहमद खां की देन है। जो कुरबानियां उन्होंने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को तालीम फराहम करने के तअ़ल्लुक से दीं उस की मिसाल मिलना दुनिया में मुशकिल है। उन्होंने एक ऐसे दौर में मुसलमानों से अंग्रेजी में तालीम हासिल करने के लिए कहा था कि जब पूरी कौम हिन्दुस्तान पर काबिज अंग्रेजों के खिलाफ एक जुट होकर खड़ी थी। सर सैयद ने यह कहा था कि अगर अंग्रेजों से लड़ना है तो इसके लिये सब से प्रभावशाली हथियार स्वयं उन्हीं की अंग्रेजी जबान है और इसे सीखे बिना वह अंग्रेजों से टक्कर नहीं ले सकते। हालांकि उन्होंने एक बहुत प्रैक्टिकल बात कही थी मगर अफसोस कि उन पर कुफ्र के फतवे सादिर कर दिये गये।

सच बात तो यह है कि शिक्षा के महत्व से कोई इनकार नहीं कर सकता। क्या खूब कहा है नवाज़ देवबन्दी ने –

लो जान दे के जब कभी इल्म व हुनर मिले,
जैसे मिले, जहां से मिले, जिस क़दर मिले।

आइये आज हम इस बात को समझ लें कि हमारी नजात (मोक्ष) सिर्फ इस में है कि हम तालीम, सही तालीम, दीनी तालीम, अ़स्री तालीम, और तालीमे निसवां में लग जायें। हमारी बच्चियों की तालीम भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि औरत हकीकत में सभ्यता की जड़ है। और जिस कौम का आधा हिस्सा रह जाये वह कौम कभी तरक्की नहीं कर सकती।

सीमाब अकबराबादी ने कहा है–

तालीम से कौमों की बदल जाती है किस्मत,
तालीम से कौमों में नया रंग जमा दो।
सिकुड़े हुए जेहनों में भरो ताजा हवायें,
ठिठुरे हुए सीनों में नई आग जला दो।।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू लखनऊ १, जुलाई २००८ से साभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(पृष्ठ १४ का शेष)

से सम्बन्ध रखते थे। प्रजा का धर्म सुन्नी मेंहदवी था और शासक शीया थे। इस कारण कभी कभी आपस में सख्त झगड़ा हो जाता और बग़ावत तक नौबत आ जाती दूसरे देशों से भी उनके सम्बन्ध अच्छे थे और एक दूसरे के दूत अच्छे अच्छे उपहार के साथ आते जाते थे। हुमायूं बादशाह का कोहनूर हीरा ईरान से इसी जमाने में वापस आया। देशी और विदेशी के झगड़े अक्सर होते और उसी ने अन्ततः सल्लतनत को तबाह किया।

औरतें भी राजनीतिक मामलों में भाग लेती थीं दकिन की मशहूर मलका चांद सुल्ताना इसी खानदान से थीं जिस ने बड़े साहस से अकबर का मुक़ाबला किया और अपना नाम हमेशा के लिये ज़िन्दा कर गयी। फौजी ताकत भी किसी दूसरे से कम न थी। यह सल्तनत बहुत जंगजू थी। बरार के बादशाह आ़दिल शाह से हमेशा लड़ती रही। इस का मुख्य कारण यह है कि अहमद निजामशाह को कुश्ती का बड़ा शौक था। यही रूचि प्रजा में भी पैदा हुई। अन्त में डुवेल लड़ने का इतना अधिक प्रचलन था कि पढ़े लिखे लोग भी इस में भाग लेते थे। आखिर जमाने में मलिक कमबर ने हबशी लड़ाई का एक ऐसा तरीका प्रचलित किया जिस को क़ज़्ज़ाक़ाना जंग कहते हैं। उसकी फौज में मरहटे बहुत थे। इस कारण मरहठों को इस लड़ाई में अधिक निपुणता (महारत) हो गयी। शिवाजी को तो यह तरीका इतना पसन्द आया कि उम्र भर इस तरीके पर लड़ता रहा।

व्यापार भी इस जमाने में होता रहा। मुख्यकर सलाबत खां के समय में व्यापार को बड़ी उन्नति मिली। परन्तु चूंकि हर वर्ष लड़ाई होती थी, इस लिये दूसरे राज्यों की तरह खेती, व्यापार और उद्योग पर पूरा ध्यान नहीं दिया जा सका। (जारी)

अनुवाद हबीबुल्ला आजमी

(किस्त सात)

अध्यापक बन्धुओं के लिये

हम कैसे पढ़ायें ?

विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

भूगोल :

लम्बे समय तक भूगोल की शिक्षा मात्र समुद्रों, पहाड़ों, नदियों, शहरों आदि के नाम तथा परिभाषाओं के रटाने तक सीमित थी। बच्चों के लिये यह अत्यन्त कष्टदायक और निरर्थक काम था। आगे चलकर इसे कुछ रोचक बनाने के लिये मानचित्र कला को रिवाज दिया गया। और कुछ असाधारण बातों के सम्बन्ध में जानकारी शामिल की गयी। जैसे दूसरे देशों के अनोखे जानवर, दुनिया की अजीब इमारतें, अनेक कौमों के लिबास और रहन सहन का ढंग आदि। लेकिन अब भूगोल ने एक महत्वपूर्ण ज्ञान की हैसियत हासिल कर ली है। इसलिये इसे साइंटिफिक भूगोल कहते हैं और इसे साइंस विषय में जगह दी गयी है, और दूसरा पहलू मानव–जीवन से सम्बन्धित है इसे मानव भूगोल कहते हैं जो सामाजिक विषय का एक हिस्सा है।

साइंटिफिक भूगोल में गर्मी, सर्दी, हवा पानी का जिक्र होता है इस में पेड़–पौधों और जीव–जन्तुओं का बयान होता है और इस में जमीन के ऊपरी हिस्से की तबदीलियों से बहस की जाती है। लेकिन साइंस की शाखाओं और भूगोल में बड़ा अन्तर है। साइंस चीजों की बनावट और उनके आपस के सम्बन्धों से बहस करती है। लेकिन भूगोल का उद्देश्य मात्र इतना है कि भू–तल पर इन चीजों की तकसीम जाहिर कर दी जाये। नैसर्गिक भूगोल यह दिखाता है कि जमीन की प्राकृतिक बनावट, जल–थल, पर्वत और नदी, सामुद्रिक धारायें, गर्मी और बारिश की तकसीम किस तरह है।

मानव भूगोल हमें मानव के प्रयासों के नतीजों से आगाह करता है और यह बताता है कि मानव–जाति किन विभिन्न कौमों और नस्लों में बंटी है। मानव ने अपनी कोशिश से जमीन को प्राकृतिक स्वरूप में क्या परिवर्तन किये हैं। और अपने लाभ के लिये विभिन्न प्राकृतिक चीजों को किस प्रकार प्रयोग में लाया है। यहां तक कि कुदरत के बाज हैबत नाक तत्वों जैसे हवा, बिजली, पानी आदि को अपने काबू में करके उन से तरह तरह की खिदमत ली है। व्यापारिक भूगोल जमीन पर आर्थिक पैदावार को दिखाता है। यहां हम जमीन को इस हैसियत से देखते हैं कि यह इन्सान के रहने की जगह है और इन्सान और उसके भौतिक वातावरण की क्रिया और प्रतिक्रिया को समझने की कोशिश करता है। भूगोल अगर एक तरफ भौतिक और भूगर्भशास्त्र से सम्बन्ध रखता है तो दूसरी तरफ मानव–इतिहास से। ऐतिहासिक भूगोल की शब्दावली संकुचित अर्थ में विभिन्न युगों की राजनीतिक सीमाओं को जाहिर करती है। लेकिन विस्तृत अर्थों में ऐतिहासिक भूगोल का उद्देश्य यह दिखाना है कि पिछले समय में इन्सानी समाज अपने माहौल के प्राकृतिक हालात से किस प्रकार प्रभावित हआ और नैसर्गिक कानूनों ने किस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं की रचना की।

अतएव भूगोल की शिक्षा का नतीजा यह होना चाहिए कि विद्यार्थी के मस्तिष्क में जमीन की खास बनावट व स्वरूप का एक संक्षिप्त नक्शा आ जाये। थल और जल के हिस्सों की बड़ी बड़ी तकसीम, स्थल के भागों की आम बनावट, जिसमें पर्वतीय क्षेत्र, मैदान और उनके ढाल शामिल हैं। फिर नदियों की दिशा, सामुद्रिक तटों के स्वरूप आदि पर गौर किया जाये। इस के बाद सामुद्रिक धारायें, भू–तल (पृथ्वी), जलवायु, वनस्पति, जीव–जन्तु की तकसीम की समझाने की कोशिश करनी चाहिय। फिर इस प्राकृतिक तल के बनावटी हिस्से जो इन्सान ने किये हैं उन का अध्ययन होना चाहिए, क्योंकि इस के बिना वह अच्छी तरह समझे नहीं जा सकते।

मानचित्र कला और मानचित्र का पढ़ना भूगोल की शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग हैं। मानचित्र की सही परिकल्पना का जानना अत्यावश्यक है। अगर बच्चे के लिये नक्शा महज एक चौरस चपटी सतह (तल) की हैसियत रखता है जिस में अनेक रंग खूबसूरती पैदा करने के लिये भर दिये गये हैं और चन्द लकीरें और नक्शे बने हुए हैं तो मानचित्र वास्तव में सहायक होने के बजाय बड़े अटकाव का कारण बनेगा। उस के लिये नक्शा एक गैर हकीकी चीज है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

चौदहवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

निजाम शाही बादशाह

सल्तनत के संस्थापक निजामुलमुल्क बहरी का असली नाम मलिक हसन है। यह खालिस दकिनी हिन्दू था। जो मुसलमान हो गया था। पहले मीर शिकार हुआ फिर उपमंत्री बना ख्वाजा जहां महमूद गांवां के मरने के बाद सुल्तान महमूद बहमनी के जमाने में वजीरे कुल हो गया। उसका लड़का मलिक अहमद बाप की जागीर का प्रबन्ध करता था। निजामुल मुल्क के मरने पर उसने सल्तनत को इस खूबी से जमाया कि उस की कोई कल ढीली न रहने दी। महमूद बहमनी के मंत्रियों ने बारबार उस पर हमले किये मगर हमेशा असफल रहे। जब आखिरी जंग में मलिक अहमद की विजय हुई तो १४८६ई० (८६५ हि०) में उसके उपलक्ष में यादगार के तौर पर एक बाग लगाया। उसके बाद ही निजाम शाही अपना नाम रखा १४६४ ई० (६०० हि०) में दौलता बाद के समान एक नगर अहमद नगर बसा कर उसको राजधानी बनाया। जो आजतक आबाद है। कुछ ही वर्षों में यह बड़ा सुन्दर बन गया। बाग निजाम को किला नुमा तैयार कराया और विभिन्न महलों को रंगीन कांच के द्वारा आकर्षक चित्रों से सुसज्जित किया। दौलताबाद फतह करके कालना और बकालना को अधीन बनाया। यह बड़ा बहादुर और तलवार का धनी था। वह १५०६ ई० (६१४ हि०) में इस दुन्या से कूच कर गया।

उस का लड़का बुर्हान निज़ाम शाह कमसिन था इसलिए सारे अधिकारों पर उसके मंत्री मुकम्मल खां का कब्ज़ा था। १५१६ ई० (६२४ हि०) में पात्री जो उस के बाप दादों का असली वतन था, फतह कर लिया। १५२१ ई० (६२८ हि०) में यहां एक शिया बुजुर्ग शाह ताहिर तशरीफ लाए जिन्होंने यहां शीया धर्म का प्रचार किया और अन्ततः यही सल्तनत का धर्म करार पाया। १६२६ ई० (६३५ हि०) में बहादुर शाह गुजराती से उसकी सख्त लड़ाई हुई और आखिर इस प्रस्ताव पर कि निजामशाह गुजरात को खिराज (राज्य कर) देगा। आपस में सुलह हो गई। जब इधर से संतोष हो गया तो कुंवर सेन ने जो अब मंत्री हो गया था, मरहठों से बत्तीस किले छीन लिये जो आज तक निजामशाह के कब्जे में न थे। १५५३ ई० (६६१ हि०) में जब वह बीजापुर की घेराबन्दी किये हुए था कि उसका देहान्त हो गया।

हुसैन निजाम शाह अपने बाप बुर्हान शाह के मरने पर तख्त पर बैठा। पहले कुछ दिनों तक तो आपस की लड़ाइयों में फंसा रहा लेकिन जब उधर से इत्मीनान हो गया तो गोवा के पुर्तगालियों को अपना अधीन बनाया। १५६२ ई० (६७० हि०) में जब दकिन के बादशाहों के बीच लड़ाई का अन्त हुआ और आपस में उनकी सुलह हुई तो निजामशाह की बेटी चांद बीबी से अली आदिल शाह का निकाह हुआ। १५६४ ई० (६७२ हि०) में हुसैन शाह ने दकिन बादशाहों की फौज के साथ मिल कर विजय नगर के राजा राम राज का अन्त कर दिया। यह तालीकोट की जंग के नाम से मशहूर है। इस लड़ाई से वापस हुआ तो परलोक का बुलावा आ गया।

हुसैन शाह के बाद उसका लड़का मुर्तजा निजाम शाह सलतनत का वारिस हुआ। पुर्तगालियों ने एक मजबूत किला बनाकर मुसलमानों को सताना शुरू किया था। उस ने उनके इस किले की घेराबन्दी कर ली। परन्तु सरदारों के मतभेद के कारण असफल वापस आया। १५७२ ई० (६८० हि०) में बरार फतह कर लिया परन्तु कुछ राजनीतिक कारणों से बरार के विजयता चंगेज खां को जहर दे दिया गया बादशाह को इस का इतना दुख हुआ कि सल्तनत से अलग हो गया सलाबत खां वजीर ने पहले तो फसादी लोगों से देश को साफ किया फिर न्याय और इंसाफ का ऐसा डंका बजा कि बहुत दिनों तक लोग याद करते रहे। उस जमाने में विभिन्न प्रकार की इमारतें बनवाई गईं आम और इमली के पांच लाख पेड़ लगवाए गये। विद्वानों का बड़ा सम्मान होता था। मुल्ला मलिक कुम्मी और मुल्ला जहूरी उस जमाने में खासकर मशहूर थे। आखिरी उम्र में

बादशाह पागल सा हो गया था। इस लिये अमीरों ने उसके लड़के मीरान को तख़्त पर बैठाया। १५८७ ई० (८८६ हि०) में मीरान हुसैन निजाम शाह तख़्त का वारिस हुआ लेकिन यह बिल्कुल दुराचारी निकला। इस लिये तीन महीने के बाद यह मार डाला गया अब हुसैन निजाम शाह के एक पोते को कैद से निकाल कर इसमाईल निजाम शाह के नाम से सरदारों ने बादशाह बनाया। शुरू में देशी और विदेशी झगड़े ने सल्तनत के अच्छे–अच्छे लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इन सरदारों में से आखिर जमाल खां मेहदवी ने सल्तनत की बागडोर अपने हाथ में ली लेकिन खुद मेहदवी था। इस लिये मेहदवी धर्म का बड़ा प्रसार किया जिस से प्रजा में असन्तोष पैदा हुआ। इन बातों की सूचना पाकर अकबर बादशाह ने हुसैन निजाम शाह के लड़के बुर्हान को जो उस के संरक्षण में था, अपने बाप का राज्य हासिल करने के लिए बरार भेजा और खान्देस के हाकिम को सहायता देने के लिए आदेश दिया। बुर्हान ने एक लड़ाई के बाद विजय पाई औरा बुर्हान निजाम शाही द्वितीय के नाम से १५६० (६६६ हि०) में तख़्त का मालिक हुआ।

उसने तख़्त पर कदम रखते ही मेहदवी धर्म को जड़ से उखाड़ डाला। शीया धर्म का फिर प्रसार किया। १५६२ ई० (१००१ हि०) में पुर्तगालियों का किला फतह करने के लिये बड़े–बड़े सरदारों को रवाना किया करीब था कि फतह हो जाये लेकिन सरदारों के आपसी मतभेद से हार हुई। १५६४ ई० (१००३ हि०) में बादशाह सख़्त बीमार हुआ। इस लिये अपने लड़के इब्राहीम को अपने सामने तख़्त व ताज का मालिक बना दिया। लेकिन इब्राहीम निजाम शाह अयोग्य निकला, शराब बहुत पीता था। थोड़े समय के बाद बीजापुर पर उसने हमला किया और इसी लड़ाई में मारा गया।

मियां मंझू दरबार के एक सरदार ने एक अपरिचित लड़के को अहमदशाह के नाम से बादशाह बनाया। दूसरे सरदार नाराज होकर लड़ाई पर तैयार हुए मियां मंझू ने मजबूर होकर अकबर बादशाह के लड़के मुराद से सहायता मांगी। १५६५ ई० (१००४ हि०) में शाहजादा गुजरात से भारी लशकर लेकर पहुंचा। असहाय चांद सुल्ताना को किले में छोड़ कर खुद कुतुबशाह और आदिलशाह से मदद लेने के लिए मियां मंझू चल दिये। चांद सुल्ताना खुद बुर्का पहन कर और हथियार लगा कर घोड़े पर सवार हुई और किले की रक्षा में लग गई। सरदारों को शर्म आई तो वह भी हर तरह किले की रक्षा में कोशिश करने लगे।

अकबर की सेना ने सुरंग लगा कर किले को उड़ा देना चाहा। सुल्ताना ने यह मालूम करके सुरंगों को खाली कराना शुरू कर दिया। कुछ बाकी रह गई थीं। उन में आग लगते ही दीवार का एक भाग गिर गया जिस को सुल्ताना ने तुरन्त ठीक करा दिया। अनाज की कमी पड़ जाने से मुराद ने इस शर्त पर सुलह कर ली कि बरार का क्षेत्र अकबर बादशाह के हवाले कर दिया जाये। जब चांद सुल्ताना को इध ार से संतोष हुआ तो उस ने इब्राहीम निजामशाह के छोटे लड़के बहादुर शाह को बादशाह बनाया लेकिन निजाम शाही सरदारों के आपसी झगड़ों से हालात बहुत खराब हो गये। एक दल ने अकबर को बुलाया तो अकबर का सेनापति खान खाना फौज लेकर पहुंचा। चांद सुल्ताना ने बहुत कोशिश की कि सरदारों में एकता हो जाये और सब मिलकर अकबर का मुकाबला करें मगर असफल रही। आखिर अकबर ने सुरंगें लगाकर अहमद नगर का किला फतह कर लिया और बहादुर शाह को गोवालियार भेज दिया। इसके बाद जनीर को राजधानी बनाकर मुर्तुजा निजाम शाह द्वितीय, फिर निजामशाह तृतीय, इसके बाद हुसैन निजाम शाह आखिर में निजाम शाह एक के बाद एक नाम के बादशाह हुए। सेना अध्यक्ष मलिक अमबर और साहूजी वजीर ने अपनी बहादुरी और नीति से कुछ समय तक रक्षा भी की परन्तु १६३६ (१०४२ हि०) में यह देश मुगल राज्य में शामिल हो गया।

निजाम शाही सल्तनत का काम

निजाम शाही सल्तनत की उम्र केवल डेढ़ सौ साल रही। उनकी राजधानी अहमद नगर थी। बड़े–बड़े महल बनाए गये मुख्य कर शीश महल बहुत मशहूर था। बाग भी बहुत लगाये। बागों की अधिकता से देश जन्नत का नमूना लगता था।

सलाबत खां और ख्वाजा जहां दकिनी जैसे मंत्री उसी जमाने में थे। उनकी रिआयापरवरी (प्रजा का पालन पोषण) और उनके जमाने में अमन व शान्ति का यह हाल था कि बहुत दिनों तक लोग याद करते रहे। विद्वानों का दरबार भी कभी–कभी लगता था। मुल्ला पीर मुहम्मद, शाह मुल्ला जहूरी, मुल्ला मलिक कुम्मी जैसे विद्वान इसी दरबार

(शेष पृष्ठ ११ पर)

नैतिकता से ख़ाली शिक्षा संसार के विनाश का कारण

मौ० सै० वाज़ेह रशीद नदवी

इस्लाम की यह विशेषता है कि उसने दूसरे धर्मों के मुकाबले में शिक्षा ग्रहण करने पर सबसे अधिक ज़ोर दिया और उसको अपनी धार्मिक शिक्षा में शामिल करके अहले इल्म को एक बड़ा मुक़ाम दिया है, लेकिन इस्लाम ने शिक्षा को दो हिस्सों में बांटा है। लाभप्रद ज्ञान और हानिकारक ज्ञान, आज के दौर में हानिकारक ज्ञान का सबसे अधिक प्रयोग हो रहा है। ये दौर शिक्षा के प्रसार और इल्म के चलन का है। इस दौर में इल्म वालों का अनुपात हरदौर से ज़्यादा है आज तालीम व तरबियत के केन्द्र गांव–गांव स्थापित हैं। होना तो यह चाहिए था कि शिक्षा के ये केन्द्र बराबरी व एकता का पाठ पढ़ाते, मानवता का सन्देश देते, नैतिक मूल्यों को विकसित करते, मिल जुल कर रहने का ढंग बताते, भलाई और ख़ैरख़्वाही (शुभचिंतन) की भावना को आम करते और सोसाइटी के विकास में अहम भूमिका निभाते लेकिन हुआ उसका बिल्कुल उलटा। आज शिक्षा, शोषण के तरीक़े बताने और स्वार्थ परता सिखाने का माध्यम बनती जा रही है और यही रूजहान वर्तमान समय के इन्सान की महरूमी और बदबख़्ती का कारण है। इसी वजह से इन्सान आपस में झगड़ रहा है और एक दूसरे के ख़ून का प्यासा बना है। ख़ानदान–ख़ानदान और हुकूमत हुकूमत से टकरा रही है। इस का कारण मक़ासिद (उद्देश्य) का विभेद और अपने मक़ासिद पर आग्रह है। शिक्षा आज गुमराह करने का माध्यम बन चुकी है। अब शिक्षा के साये में साजिशों का जाल बुना जाता है और शिक्षा के केन्द्र भय और दहशत का माहौल पैदा करते हैं। जो देश शिक्षा में विकसित हैं वहीं इन्सानों की हत्या करने के ख़तरनाक हथियार बनाये जाते हैं। वहीं शिक्षा के माध्यम से मुजरिमों के जुर्म को छुपाने और बेकुसूरों को मुजरिम बनाने का कार्य किया जाता है। यह वह देश हैं जो शिक्षा में सर्वोत्तम और विकसित सभ्यता में उच्चतम समझे जाते हैं।

उन्हीं विकसित देशों में एक देश इसराईल है, जो शिक्षा में दूसरी कौमों से बहुत आगे है लेकिन उसने दूसरों के देश पर कब्जा कर रखा है और वहां के असली नागरिकों पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ रहा हैं। वहां के शहरियों को दूसरे देशों में पनाह लेने पर विवश किया है और उनका समर्थन वही राष्ट्र कर रहे हैं, जो शिक्षा व संस्कृति में दूसरी कौमों से ऊंचा स्थान रखते हैं। इसराईल अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करता है और उनका बुद्धिजीवि वर्ग लेखक व मीडिया और यूरोप देशों में रहने वाले नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता इन पापों का समर्थन करते दिखाई देते हैं।

उन्हीं देशों में पूर्व सोवियत संघ की मिसाल है जिसने अफगानिस्तान पर कब्जा किया और लाखों बेगुनाह लोगों की हत्या की। लाखों को देश से निष्काषित किया फिर उनके शहरियों के अधिकार छीन लिये। अत्याचार के माध्यम से वहां के नागरिकों को दूसरे देशों में पनाह लेने पर विवश किया अपने मिथ्या विचारों के अनुसार जीवन पद्धति अपनाने पर जोर दिया। विश्व के एक बड़े भाग ने उस के सत्ता काल में अत्याचार सहे और दासता का जीवन बिताया, और उस दर्शन से प्रभावित लोगों ने दूसरे की धारणाओं (विश्वासों) पर हमले किये। शिक्षा में विकसित देश लम्बे समय तक अपनी शिक्षा और सभ्यता व संस्कृति को उच्चस्तरीय होने का दावा अलापते रहे और समस्त विश्व को निरक्षर साबित करने पर तुले रहे। उन्होंने कानून बदले और इतिहास गढ़े और स्थानीय संस्कृतियों को बिगाड़ने का कार्य किया और उस पर अपनी भाषा और अपनी संस्कृति का प्रयत्न किया। उसने फिलिस्तीन और कबरस का मसला पैदा किया और वांशिक आधार पर देशों की सहायता की और विश्व को उस दो राहे पर ला ख़ड़ा किया जहां केवल हत्या व भय का वातावरण है। ब्रिटिश के अत्याचारों का अनुमान भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन से लगाया जा सकता है। भारत के एक प्रसिद्ध पत्रकार ने अपनी पुस्तक में साबित किया है कि अंग्रेजों ने भारत में सत्ता प्राप्त करने के लिये ग्यारह मिलियन व्यक्तियों की हत्या की।

शैक्षिक और सांस्कृतिक लिहाज से विकसित देश जर्मनी है। हिटलर के

दौर में इन्सानों पर जो अत्याचार ढाये गये वह इतिहास का महत्वपूर्ण अंश है। इन विकसित देशों ने दो विश्व युद्ध प्रायोजित किये जिनमें सत्तर मिलियन जानें गईं। जर्मनी में यहूदियों को जीवित जलाये जाने की घटना (हकीकत या अफ़साना) इन्कार तो दरकिनार उस पर शक करना भी न माफ किये जाने वाला पाप है। लेकिन यहां प्रश्न यह है इस घटना को अंजाम किसने दिया? क्या मुसलमानों ने जिन पर आतंकी गतिविधियों में लिप्त होने का आरोप है या पूरबी नागरिकों ने जिन पर अशिक्षा और निम्नस्तरीय जीवन जीने का लेबल लगा है? उत्तर उसका केवल एक ही है कि जलाने की ये घटना अगर सत्य है तो यूरोप संस्कृति की प्रतिनिधित्व करने वाली कौम जर्मन नागरिकों की दरिंदगी का खुला सबूत है और अगर झूठ है तो पश्चिमी दुनिया के झूट पर एकमत होने का एक उदाहरण है।

इन सभ्य तथा विकसित देशों में सबसे पहला नाम अमेरिका का है। जिसने जापान में बेकुसूर जापानियों पर एटम बम गिराकर लाखों इन्सानों को मौत की नींद सुला दिया। वर्षों उसने वेतनाम में खून की होली खेली और निहत्थे वियतनामियों के साथ वह व्यवहार किया जो भेड़िया बकरी के साथ करता है। उसके बाद जब उसकी खून की प्यास नहीं बुझी तो अफगानिस्तान ईराक, फिलिस्तीन का रूख किया और उनको अपने अत्याचार का निशाना बनाया।

इन विकसित देशों में एक नाम फ्रांस का भी है जिसने अल्जजाइर में दस लाख मुसलमानों का खून बहाया। धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं के विरूद्ध बागियों की एक पूरी सेना तैयार करके समस्त विश्व में उसका जाल बिछाया।

ये कुछ उदाहरण थे इन विकसित, सुसंस्कृति तथा सभ्य देशों के अगर इन पश्चिमी देशों का खूनी इतिहास लिखा जाए और उनके अत्याचार की सत्य कथाएं पूरी व्याख्या के साथ लेखनी में लाई जाये तो जिल्दों की जिल्दें तैयार हो सकती हैं।अल्लाह हम को लाभदायक ज्ञान प्राप्त करने का सामर्थ्य दे।

(पृष्ठ १७ का शेष)

हैं, जहां शाह साहब पुलिस कप्तान के ओहदे पर तैनात रहे। सिविल सर्विसेज के इन लोगों ने सेवा का एक सुखदायक कीर्तिमान स्थापित किया है जिस के लिये वे आज भी याद किये जाते हैं।

प्रत्येक राज्य (स्टेट) में लोक सेवा आयोग (पब्लिक सर्विस कमीशन) काइम है जो पी०सी०एस० (प्राविंशियल सिविल सर्विस), पी०सी०एस० (जे०) अर्थात ज्यूडिसरी (न्यायिक) सेवा, पी०पी०एस० (राज्य पुलिस सेवा) पी०ई०एस० (प्राविंशियल एजुकेशनल सर्विस अर्थात राज्य शैक्षिक सेवा) आदि के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु हर साल परीक्षा कराता है। इस सिविल सर्विसेज की चयन प्रक्रिया के भी तीन मरहले हैं अर्थात प्री, मेन और इन्टरव्यू।

सिविल सर्विसेज के कर्मचारियों की चार श्रेणियां हैं 'क' श्रेणी, 'ख' श्रेणी, 'ग' श्रेणी और 'घ' श्रेणी इन्हें प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी भी कहा जाता है।

सिविल सर्विसेज के कर्मचारियों का प्रमुख कार्य सेवा कार्य है, खिदमत करना है, आचार्य संहिता (कोड आफ कन्डक्ट) का पालन करते हुए अपने उत्तरदायित्वों अर्थात जिम्मेदारियों को अंजाम देना है, अपनी ड्यूटी निष्ठापूर्वक करनी है। किन्तु जब से सेवा भाव में कमी आई है, राजनैतिक हस्तक्षेप बढ़ा है, नौकरी करके दौलतमन्द बनने की भावना शक्तिशाली और ताकतवर हुई है तब से नियम कानून की अवहेलना करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार बन गया है, रिश्वत खोरी और चोर बाजारी ऐसी फली फूली है जैसे तालाब में जलकुम्भी और आज स्थिति यह आ गयी है कि भ्रष्टाचार दैनिक जीवन, हवा और पानी का पर्याय बन चुका है। इस के बिना किसी सिविल सर्विस की कल्पना मात्र ही की जा सकती है। अपवाद का नियम है इस से इनकार नहीं किया जा सकता। अपवाद हमेशा रहे हैं और रहेंगे।

कोई चीज जहां खोती है वहीं मिलती है। यह कुदरत का कानून है। हमने जो कुछ खोया है, हमारी सभ्यता और संस्कृति का जो नगीना खोया गया है, उस की जगह हमारी अंतरात्मा है, हमारा ज़मीर है। पूरब की, अपनी पहचान (जो खो सी गयी है) की तलाश अपने जमीर में करनी चाहिए। काश हम ऐसा कर पाते।

सिविल सर्विसेज के लिये चुने गये उम्मीदवरों को हमारी मुबारकबाद, साधुवाद इस पैगाम के साथ कि –

"जावेदां है वह जिन्दगी ऐ दोस्त! दूसरों के जो काम आ जाये।"

जब तक कोई अपने भाई की मदद में रहता है अल्लाह उस की मदद में रहता है।

एम० हसन अंसारी

सिविल सर्विसेज हमारे देश की सर्वाधिक सम्मानित और चैलेंजिंग सेवा है हम नौकरी नहीं कहते सेवा कहते हैं कि प्रत्येक कर्मचारी का परम कर्तव्य सेवा कार्य है, खिदमते खल्क है। मुलाजिमत की रूह खिदमत है। आई०सी०एस० (इन्डियन सिविल सर्विसेज) को आजादी (१९४७) के बाद आई०ए०एस० (इण्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस, भारतीय प्रशासनिक सेवा) कहा जाता है। इस का आयोजन अर्थात इसके लिये चयन का कार्य यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन अर्थात यू०पी०एस०सी० (संघ लोक सेवा आयोग) के जिम्मे है आई०ए०एस० के मुकाबले जाती इम्तेहान (कम्पटीटिव इक्ज़ामिनेशन) जिसे प्रतियोगितात्मक परीक्षा कहते हैं हर साल होती है। इस चयन प्रक्रिरया के तीन स्टेजेज़ हैं। (१) प्रीलिमिनरी रिटेन टेस्ट जिसे आमतौर से प्री कहा जाता है (२) मेन रिटेन टेस्ट (३) इन्टर व्यू या साक्षात्कार। आई०ए०एस० के साथ–साथ आई०पी०एस० (इण्डियन पुलिस सर्विस) आईएफ०एस० (इन्डियन रेवेन्यू सर्विस) की भर्ती भी होती है।

इस परीक्षा में ग्रेजूएशन के अन्तिम वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित हो रहे विद्यार्थी शामिल हो सकते हैं। क्योंकि इस के लिये न्यूनतम शैक्षिक योग्यता ग्रेजुएशन है। आयु सीमा न्यूनतम इक्कीस साल अधिकतम तीस साल है।

आई०ए०एस० (2007) में कामयाब होने वाले मुस्लिम उम्मीदवार और उनके रैंक

क्र.	नाम	रैंक
१.	मरयम फरजाना सादिक	३०वीं
२.	राशिद मुनीर खां	६१वीं
३.	मुहम्मद जुबैर अली हाशिमी	८२ वीं
४.	सारः रिजवी अफजाल अहमद	८६वीं
५.	शेख आरिफ हुसैन	११६वीं
६.	अबू मतीन जार्ज	१३७वीं
७.	साजिदा बेगम	१६६वीं
८.	तफसीर इकबाल	१८१वीं
९.	हामिद अख्तर	२०२वीं
१०.	अब्दुल जब्बार	२५०वीं
११.	अब्दुल हकीम	२९०वीं
१२.	सदर आलम	३११वीं
१३.	अल्ताफ हुसैन	३१३वीं
१४.	एहतशाम अंसारी	३८५वीं
१५.	लियाकत अली आफाकी	४०३वीं
१६.	वसीमुर्रहमान (कासिमी)	४०४वीं
१७.	अबू इमरान	४१८वीं
१८.	सादिक आलम	४७९वीं
१९.	जाकिर हुसैन	५१५वीं
२०.	मुहम्मद परवेज आलम	५१७वीं
२१.	शम्स हमीद	५३५वीं
२२.	शादाब अहमद	६०४वीं
२३.	मासूम अली सुरूर	६०८वीं
२४.	मुश्ताक अहमद	६४२वीं
२५.	मुहम्मद फैसल	६४३वीं

पहले मरहलः यानी प्री–टेस्ट में पहला पर्चा अनिवार्य होता है और यह जनरल नालेज (सामान्य ज्ञान) का होता है, इसमें १५० प्रश्न होते हैं। दूसरा पर्चा इख्तियारी मजमून (गौण विषय) का होता है। गौण विषयों की सूची में से अभ्यार्थी (उम्मीदवार) को एक विषय चुनना होता है इसमें १२० प्रश्न होते हैं।

मेन परीक्षा में अनिवार्य विषय जनरल नालेज हिन्दी और अंग्रेजी के साथ ही दो इखतियारी मजामीन (गौण विषय) लेना होता है। सिविल सर्विसेज की तैयारी बहुत मेहनत चाहती है। कोचिंग सेन्टर गाइडेंस देते हैं, मेहनत तो बहरहाल उम्मीदवार को ही करनी पड़ती है।

आजाद भारत के एक मुमताज आई०सी०एस० सैयद अतहर हुसैन थे जिनका एक जमाने में लखनऊ में दर्से कुरआन (साप्ताहिक) हुआ करता था उन्हीं के नक्शे कदम पर चलकर मुम्ताज आईसीएस जेडी शुक्ल (जनार्दन दत्त) ने मानस मर्मज्ञ की उपाधि अर्जित की। महमूद बट के हस्ताक्षर से जारी शासनादेश उत्तर प्रदेश शासन की बहुमूल्य धरोहर है। मुमताज आईपीएस ए०एम०शाह की अनोखी प्रशासनिक और बौद्धिक प्रखरता के किस्से आज भी रायबरेली, बांदा आदि जिलों के बड़े बूढ़ों से सुने जा सकते

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इस्लाम के प्रथम ख़लीफ़ा

हज़रत अबूबक्र रज़ि०

लेखक : डॉ० मो० रफी

इस्लामी इतिहास के प्रधान खुलफा में हजरत अबू बक्र का नाम सबसे ऊंचा है। आपका नाम अब्दुल्लाह, वालिद का नाम अबू कहाफा और वालिदा उम्मुल खैर लकब से मशहूर थीं। आप (रज़ि०) का उपनाम उबू बक्र व लक़ब (उपाधि) सिद्दीक था। आपको यह सिद्दीक़ लक़ब नबी करीम (स०) ने ही दिया था, क्योंकि आप (रज़ि०) बे ख़ौफ़ होकर हज़रत मोहम्मद स० की बे–झिझक तस्दीक़ फरमायी और सिद्क़ को अपने लिए लाज़िम फ़रमाया।

आप क़बीला क़ुरैश की एक शाख बनू तमीम से सम्बन्धित थे और आप की गणना कुरैश के सम्मानित व्यक्तियों में की जाती थी। उस युग में शिक्षा का अधिक प्रचलन न होने पर भी आप की गणना शिक्षित व्यक्तियों में की जाती थी। आप बचपन से ही पैगम्बर हज़रत मोहम्मद स० के प्रिय मित्र थे जब आप (सल्ल०) अपने चचा के साथ व्यापार के लिये निकले तो हजरत अबू बक्र ने हजरत बिलाल को किराये पर लेकर आप की ख़िदमत के लिये साथ कर दिया।

इस्लाम धर्म स्वीकार करने से पहले क़ुरैश क़बीले के सभी लोग हज़रत अबूबक्र की ईमानदारी, अमानतदारी, सद्व्यवहार तथा उच्च आचरण के कारण उन्हें अपना सबसे प्रिय मानते और पूरा अरब समाज उन्हें आदर की दृष्टि से देखता था। ये पूर्व इस्लामी काल के उस बुरे समाज में जिसमें अच्छाइयां नाम मात्र की थीं तथा पूरा समाज का समाज बिगड़ा हुआ था, उसमें भी अपने आपको हर तरह की बुराइयों से दूर रखते थे और आप कहा करते थे – "शराब मनुष्य की बुद्धि स्वभाव व आत्मा को खोखला कर देती है इस का प्रभाव मनुष्य की आनुवांशिकता पर पड़ता है।

जिस समय पैगम्बरे इस्लाम हजरत मो० सल्ल० ने नुबूवत का एलान किया तो सब से पहले आप रजि० इस्लाम कुबूल करने वालों में से थे। आप ने इस्लाम कबूल करने में पहल की और नमाज पढ़ने में भी पहल की, यहां तक की अल्लाह पाक ने खिलाफत का ताज भी सबसे पहले आप के ही सर पर रखा।

जिस समय नबी करीम सल्ल० का देहान्त हुआ, उस समय पूरा अरब मुसलमानों के कब्जे में आ चुका था और पूरे मुल्क में मरकजी हुकूमत कायम हो चुकी थी। चूंकि हजरत मो० (सल्ल०) ने अपने बाद किसी को अपना उत्तराधिकारी (खलीफा) नहीं नियुक्त किया था। इसी कारण अब यह फैसला करना मुसलमानों की जिम्मेदारी थी कि आप (सल्ल०) के बाद इस्लामी हुकूमत की। बागडोर किसके हवाले की जाये। अतएव मदीने के मुन्तखब मुसलमानों ने मदीना शरीफ में जो इस्लाम धर्म का केन्द्र था। सकीफा बनु सअद के हाल में इकट्ठा होकर हजरत अबू बक्र के हाथ पर खिलाफत की बैअत करके आप रज़ि० को अपना पहला ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया।

वास्तव में, यह काम इतनी शीघ्रता पूर्वक इसलिए किया गया कि कहीं शैतान को उनके दिलों में फूट डालने का मौका न मिल जाए और मुनाफिक सर न उठा सकें तथा अल्लाह के रसूल सल्ल० की तक्फ़ीन व तदफ़ीन इस हाल में हो कि मुसलमान एक धागे से जुड़े हो और उनका अमीर मौजूद हो तथा उनके सारे मामलों की देखभाल कर रहा हो, चुनांचि ऐसा ही हुआ अल्लाह के रसूल सल्ल० का कफ़न दफ़न मुसलमानों के ख़लीफ़ा के नेतृत्व में अन्जाम पाया।

आप (रज़ि०) सहाबा किराम में सबसे विद्वान (आलिम) तथा तीव्र–बुद्धि महापुरुष थे। आपने रसूल (सल्ल०) की उपस्थिति (मौजूदगी) में हुजूर (स०) के आदेश से नमाज़ पढ़ायी और आप के साथ रसूल (सल्ल०) ने सफरे हिजरत किया तथा आपने रसूल (सल्ल०) को अपने कन्धों पर उठाया। आप (रजि०) ने इस्लाम पर बहुत बड़े एहसानात फरमाये हैं इसलिये रसूल (सल्ल०) ने विसाल के वक्त एलान फरमाया – "मैं सारे लोगों के एहसानात ख़त्म करके जा रहा हूं, परन्तु अबूबक्र सिद्दीक रजि० एक ऐसे शख्स हैं जिसके एहसानात मुझ पर बहुत ज्यादा हैं। कियामत के दिन अल्लाह तआला से इनके एहसानात का सवाल करके बदला दिलाउंगा।"

हजरत अबूबक्र खलीफा बनने के बाद मिम्बर पर चढ़े और फरमाया –"ऐ लोगो! में तुम्हारा हाकिम बनाया

गया हूं। मैं तुमसे अच्छा नहीं हूं और न इस काबिल हूं। जब मैं इस्लामी शरीअत के अनुसार सारे काम करूं और तुम्हारी सेवा करूं तो तुम्हारा फर्ज़ है कि मेरी मदद करो। अगर मैं बाद में सीधे रास्ते से भटक जाऊं तो तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम मुझे रास्ते पर डाल दो। सच्चाई की पैरवी करो। झूठ को अपने नजदीक न आने दो। तुममें सबसे कमजोर की मदद मेरा कर्तव्य है अगर सबसे ताकतवर कमजोर के हक को छीन ले तो कमजोर की मदद करना मेरा फर्ज है।''

हजरत मो० (सल्ल०) के इन्तकाल के बाद जब हजरत अबुबक्र खलीफा हुए तो मक्का व मदीना शहर के अतिरिक्त कुछ नव मुस्लिम कबीलों के कुछ लोगों ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। पूरे अरब में धर्म परिवर्तन का एक उपद्रव शुरू हो गया बहुत से लोगों ने मुसलमान होने के बावजूद जकात देने से इनकार कर दिया। कुछ लोग झूठी पैगम्बरी का दावा करने लगे और कुछ लोग इस्लाम से स्वतंत्र होकर इस्लाम के झंडे से हटने लगे। वास्तव में उस समय ऐसी गम्भीर समस्या थी कि हजरत उमर फारूक जैसे लोग, अपनी योग्यता तथा क्षमता के बावजूद हजरत अबूबक्र को नर्मी तथा धैर्य से काम लेने का परामर्श देने लगे, लेकिन हजरत अबूबक्र की योग्यता ने समस्या और उसके दूरगामी परिणाम को समझ लिया था विद्रोहियों के मुकाबले पर डट गये जिसका परिणाम यह हुआ कि एक ही वर्ष के अल्प समय में समस्त अरब से लड़ाई झगड़े को समाप्त करके शान्ति व्यवस्था स्थापित कर दी।

हजरत अबूबक्र सिद्दीक को अपनी खिलाफत के समय में सबसे अधिक चिन्ता इस बात की रहती थी कि पैगम्बर साहब के युग से किसी भी मामले में जरा सी भी भिन्नता न आने पाये। इसी कारण से उनके खिलाफत काल में हमें अधिक नवीनता नहीं दिखायी देती है। कोई भी वाद–विवाद आता तो सबसे पहले उसका आदेश किताबुल्लाह में ढूढ़ते अगर मिल जाता तो ठीक अन्यथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में देखते अगर स्वयं हदीस से न मालूम होता तो फिर श्रेष्ठ सहाबा किराम से परामर्श लेते।

देश की व्यवस्था को अधिक उपयुक्त बनाने के लिये आप रजि० पूरे अरब द्वीप को विभिन्न राज्यों तथा जिलों में विभाजित कर रखा था और उनमें से प्रत्येक राज्य का अलग–अलग अमीर नियुक्त कर रखा था।

वास्तव में अबूबक्र के खिलाफत काल में शासन की आय काफी बढ़ गयी थी। उश्र, जकात जिज़्या तथा युद्ध में प्राप्त माले गनीमत आदि विभिन्न साधनों से बैतुलमाल में धन आता था लेकिन हजरत अबूबक्र ने कभी भी उस धन को जमा नहीं किया। कुछ भी धन प्राप्त होता तो उसे तुरन्तु फकीरों, दीन दुखियों, तथा जरूरतमन्दों में बांट देते और कभी–कभी माल बांट देने के बाद बैतुलमाल में झाड़ू लगवा देते। उसी का परिणाम यह निकला कि जब आप (रजि०) की मृत्यु के बाद बैतुलमाल देखा गया तो उसमें केवल एक दिरहम निकला।

वास्तव में हजरत अबूबक्र सिद्दीक के जीवन का उद्देश्य ही धर्म की सेवा करना था और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से लेकर अपने जीवन की अंतिम सांस तक जो कुछ किया वह सब धर्म की सेवा के लिये किया। खलीफा बनने के बाद मुरतद्दीने इस्लाम और जकात न देने वालों से युद्ध किया तथा अपना यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक वाक्य कहा जो आज भी इस्लामी मिल्लत के लिये एक धरोहर है वह वाक्य यह है – ''क्या मेरे रहते हुए धर्म में काट छाट हो सकती हे।'' वास्तविकता तो यह है कि अबूबक्र रजि० का सारा खिलाफत काल इसी वाक्य की व्यवहारिक तफसीर व तशहीर में गुजरा। आप इस्लाम धर्म के प्रचार प्रसार तथा धार्मिक निर्देशों से एक क्षण के लिये भी कभी पीछे नही रहे।

हजरत अबूबक्र को इस बात का बड़ा ध्यान था कि उनके शासन काल में कोई ऐसा काम न होने पाये जो हुजूर सल्ल० के युग में न हुआ हो। इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि तदवीने कुर्आन (कुरान शरीफ के संकलन) में उन्हें इसी कारण संकोच था कि हुजूर सल्ल० ने उसे नहीं किया तो मैं कैसे कर सकता हूं।

लेकिन तदवीने कुर्आन (कुरान को संकलन) समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता थी क्योंकि सहाबा किराम की एक बड़ी संख्या विभिन्न युद्धों विशेषकर यमामा के युद्ध में शहीद हो गयी थी तथा उसमें अधिकांश हाफिजे कुर्आन थे। इस लिये हजरत उमर ने विशेष रूप से आग्रह किया कि कुर्आन मजीद को एक पुस्तक के रूप में संकलित कर लिया जाये। जिससे उसके

बिखरने का भय न रहे। हजरत अबू बक्र किसी तरह से भी इसके लिये तैयार न थे। लेकिन हजरत उमर के बार–बार आग्रह करने से वह तैयार हो गये, और इस काम को पूरा करने के लिये आप रजि० ने जैदबिन साबित रजि० को आदेश दिया कि हाफिजों की मदद से कुर्आन मजीद की आयतों तथा सूरतों को इकट्ठा करें।

हजरत अबू बक्र के जीवन की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि आपने सुन्नते रसूल को जिन्दा रखा। आप रजि० सहाबा किराम में इस्लामी शरीअत के सबसे ज्ञाता थे। इल्मुल अन्साब (वंशावली विज्ञान) के सबसे माहिर माने जाते थे। हजरत अबूबक्र रजि० कविता में भी अधिक रूचि लेते थे। जाहिली काल में कविताओं की रचना किया करते थे। इस्लाम के नियमों के पाबन्द थे इस्लाम के नियमों को सामने रखकर ही आप रजि० ने अपनी खिलाफत का कार्यभार संभाला तथा उन समस्याओं पर काबू पाया जिनका समाधान करना एक अति आवश्यक कार्य था।

वफ़ात :

हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि० सन् १३ हिजरी में बीमार हुए १५ दिन के अन्दर आपके बुखार में तेजी आ गयी। जब आप रजि० को यकीन हो गया कि आखिरी वक्त करीब आ गया है तब आपने हजरत अब्दुरर्हमान बिन औफ को बुलाकर खिलाफत के बारे में मशवरा किया और हजरत उमर रजि० को ख़लीफ़ा बनाने के बारे में पूछा अब्दुर्रहमान (रजि०) ने कहा उमर रजि० के मिजाज में सख्ती है तब आप रजि० ने फ़रमाया खिलाफत ज़रूर उमर रजि० को नर्म दिल बना देगी। इसके बाद आप (रजि०) ने हजरत उस्मान रजि० से भी यही सलाह ली और फिर अली रजि० तलहा रजि० से यही परामर्श लिया, सब ने उमर रजि० के हक में फैसला दिया। आप ने हजरत उस्मान रजि० से हजरत उमर रजि० के लिये वसीयत नामा लिखवाया और इसके बाद और लोगों से राय ली सबने ह० उमर रजि० के पक्ष में फैसला दिया।

यह वसीयतनामा जिस दिन लिखा गया उसी दिन शाम को मगरिब बाद लगभग तिरसठ साल की आयु में आप रजि० की वफात हुई। और इशा की नमाज से पहले आपको दफना दिया गया।

हजरत अबू बक्र (रज़ि०) ने अपने कफन के लिये वसीयत फरमाई थी कि यही लिबास जो मैं पहने हूं मेरा कफन होगा। एक जगह इस में जअफरान का रंग है उस को धो डालना, आप दुन्या से बिल्कुल पाक दामन गये अपनी खिलाफत के जमाने में अपने किसी करीबी अजीज को कोई उहदा नहीं दिया। किसी मकाम का अफ्सर नहीं बनाया, आप दुन्या को दिखला गये कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम के जानशीन ऐसे होते हैं।

आप की वफात के बाद बैतुलमाल देखा गया तो बिल्कुल साफ था अम्न और बाहमी इत्तिफाक का यह हाल था कि फारूके आजम जो मदीने के काजी थे, फरमाते हैं कि पूरा पूरा महीना गुजर जाता और दो मुकदमे भी न आते।

●●●

तारीख़ी वाक़िआत हवालों (सन्दर्भों) के बिना न लिखें।

माँ

डॉ० अब्दुर्रब साकिब बरमंघम

मां निअमते यज़दां है
मां रहमते रहमां है
मां प्यार की छाया है
मां धूप में साया है
मां निअमते उज़्मा है
मां दौलते कुबरा है
तालीमे ख़वातीं को
तुम आम करो हर जा
तर्बीयते दीं पर भी
तुम काम करो हर जा
इक मां के सुधरने पर
बच्चे भी सुधरते हैं
और मां के बिगड़ते पर
बच्चे भी बिगड़ते हैं।
तौफ़ीक़ दे ऐ मौला –
माओं को शरीअ़त की
तौफ़ीक़ दे माओं को
तौहीद की सुन्नत की
महरूमों को माओं के
जन्नत में मिला मौला
बच्चों को तू माओं से
जन्नत में मिला मौला
मां को भी तू साकिब की
जन्नत में जगह दे दे
हर मोमिनः मां को तू
जन्नत की जज़ा दे दे

मख़्लूक़ अल्लाह का कुंबा है

यूसुफ अहमद कुरैशी

अल्लाह तो वह है जिस में सारे भले गुण हैं, वह अवगुण रहित है, समस्त प्रशंसाएं उसी के लिये हैं वह समस्त जगतों (आलमों) का स्वामी तथा पालन हार है वह बड़ा ही दयावान और कृपालु है। वह कर्मों के फल दिये जाने के दिन का मालिक है। (अतः उस की शिक्षा तथा अपने मन की चाहत से यह प्रण हम बारम्बार और हर नमाज की हर रकअत में दुहराते हैं) हे स्वामी (मालिक) हम केवल तेरी आराधना करते हैं तथा तुझ ही से सहायता मांगते हैं, (और तुझ से प्रार्थना करते हैं कि) हम सब को सीधा मार्ग दिखा, पुरस्कारित जनों का मार्ग, प्रकोप भागियों तथा भटके हुओं का मार्ग नहीं। आमीन।

खुदा के अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद हैं (उन पर ईश कृपा हो) और खुदा की अन्तिम सन्देश पुस्तक पवित्र कुर्आन है, कुर्आन में जगह जगह बताया गया है कि खुदा ही सृजन हार है, वही पालनहार है, वही आजीविका प्रदान करता है, वही रोग देता है, वही रोगों से उबारता है, वही जीवन दाता है, वही मृत्यु स्वामी है। उस की अनुमति के बिना न वायु चल सकती है, न वर्षा हो सकती है न पत्ता हिल सकता है, न सूर्य चमक सकता है, न दाना उग सकता है, अर्थ यह कि वह सर्व शक्तिमान है यह ब्रह्माण्ड उसी ने रचा है तथा समस्त सृष्टि हर प्रकार से उसी के अधिकार में है। अलबत्ता मानव जाति तथा जिन्नों को अपने सन्देष्टाओं द्वारा सत्य मार्ग दिखाकर सत्य अथवा असत्य गृहण करने का अधिकार दे रखा है, यह उसकी अपनी नीति है। इसी आधार पर दूसरे जीवन में जो सदैव रहेगा पुरस्कारित अथवा दण्डित करेगा। इसी श्रृंखला में अंतिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बताया कि मैं समस्त सृष्टि हेतु अन्तिम सन्देष्टा हूं मेरे पश्चात कोई सन्देष्टा अर्थात कोई नबी अथवा रसूल न आएगा और अब मेरे अनुकरण के बिना आखिरत में कोई भी मोक्ष (नजात) प्राप्त न कर सकेगा।

हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह नहीं बताया कि समस्त संसार उन पर ईमान ले आएगा और जैसा कि दिखाई पड़ रहा है कि जगत के अधिक लोगों ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया, ऐसे लोगों को इस्लाम ने (मुसलमानों द्वारा) अपना भली भांति परिचय देकर उनको खुदा के हवाले कर दिया, कुर्आन ने "ला इक्राह फिद्दीन" (दीन में दबाव नहीं) की घोषणा कर दी, अपितु जिन लोगों ने इस्लाम स्वीकार करने वालों को सताना आरम्भ किया, किसी को रस्सी में बांध कर दोपहर की गर्म रेत और पत्थर पर घसीटा, छाती पर भारी पत्थर रख दिया, किसी को दहकते कोयलों पर लिटा दिया, किसी को मार मार कर अधमुआ कर दिया, यहां तक "सुमय्या" महिला को बर्छा मार कर शहीद कर दिया, कितनों को घर से निकाल दिया, स्वयं अल्लाह के रसूल के घर को उन को बध कर देने के इरादे से घेर लिया तब अल्लाह ने अपने रसूल को हिजरत (देश त्याग) की अनुमति दी और आप मदीना चले गये, यदि मुसलमान अपने मन से निर्णय लेते तो परिणाम की चिन्ता किये बिना लड़ पड़ते, परन्तु ऐसे अत्याचारियों से लड़े उस समय जब अल्लाह की ओर से उनसे लड़ने का आदेश आया। परन्तु जिन लोगों ने न तो मुसलमानों को बे घर किया, न उन पर अत्याचारा किया, ऐसे लोगों से मेल मिलाप रखने तथा उनसे भला व्यवहार करने का आदेश पवित्र कुर्आन में स्पष्ट रूप में पाया जाता है।

अनुवाद पढ़िये : "अल्लाह तआ़ला तुम को उन लोगों के साथ भले बरताव तथा न्याय से नही रोकता जो तुम से दीन के सम्बन्ध से नहीं लड़े और न उन्होंने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला निःसन्देह अल्लाह तआ़ला न्याय करने वालों को प्रिय रखता है।" (६०:८)

अल्लाह के रसूल (सल्लललाहु अ़लैहि वसल्लम) की स्पष्ट हदीस है : अनुवाद : सृष्टि अल्लाह का परिवार है, तुम में से सब से अधिक अल्लाह को वह प्रिय है जो अल्लाह के परिवार को सब से अधिक लाभ पहुंचाता है।" (मुसनद अबी यअ़ली मोसली हदीस नं० ३३१५) और कुर्आन के सूर–ए–इख्लास में है कि "अल्लाह ने न किसी को जना न वह जना गया" अतः परिवार से अर्थ है सृष्टि, कि सृष्टि को अल्लाह ने रचा

है उस को अपनी रचना से प्रेम है। जैसे एक फुलवारी को माली का परिवार कहें जब कि माली ने केवल पेड़ पौधे लगाए हैं उन को जीवन नहीं दिया फिर भी फुलवारी के पौधों को नष्ट करने वाले को वह रोकता है, पर सृष्टि को तो अल्लाह ने उत्पन्न किया, अतः अल्लाह की अनुमति अथवा आदेश के बिना उस की सृष्टि को जो बिगाड़ेगा, नष्ट करेगा वह अल्लाह के प्रकोप का भागी होगा। तो फिर हम को चाहिए कि हम अल्लाह की समस्त सृष्टि को अपना समझें खुदा का परिवार जानें मानव जाति तो उत्तम सृष्टि है उस को कैसे कष्ट पहुंचाएं। यहां किसी कवि की यह कविता याद रखने योग्य है।

सबक ये है सुन लो रसूले खुदा का
कि मख़लूक़ सारी है कुंबा खुदा का
इबादत है ये और तक़ाज़ाए ईमां
कि काम आए दुन्या में इन्सां के इन्सां
करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
खुदा मेहरबां होगा अ़र्शे बरीं पर

एक मुसलमान सभी मानव जाति का आदर करता है, हिन्दू हो सिख हो ईसाई हो बौधी हो जैनी हो अगर वह मुसलमानों पर अथवा किसी पर भी अत्याचार नहीं करते तो वह उन को अपना मित्र बनाता है। मुसलमानों के लिये आवश्यक है कि वह देश वासियों से मेल मिलाप रखें, पड़ोसियों का आदर करें, उन के दुख पीड़ा में हाथ बटायें उनकी खुशियों में शरीक हों, उन की सहानुभूति से लाभ उठाएं, उनसे सहानुभूति कर के उन का मन जीतें और अल्लाह को प्रसन्न करें।

जिन भाइयों ने अपने ही धर्म पर रहने का निर्णय लिया है तो हम उन के धर्म पर आलोचना कर के दूरी न उत्पन्न करें, धर्म की बात आए तो बड़ी सावधानी से बोलें, यदि आप ने कहा सभी धर्म सत्य हैं तो आपने बड़ी भूल की, आप कहें कि कुछ बातें जो सामाजिक जीवन के लिये आवश्यक हैं वह सभी धर्मों में पाई जाती हैं उनको अपनाने की मांग सभी धर्मों ने की है यदि हम उनको अपनाएं तो धर्म की मांग भी पूरी हो और समाज सुख शान्ति भी पाये। उदाहरणार्थ – कुछ ऐसी बातें प्रस्तुत हैं :–

१. खुदा (ईश्वर) से प्रेम करना और उसके प्रकोप से डरना।
२. माता पिता के सम्मान के साथ उन की सेवा करना।
३. जिन कार्यों को भला जानें उनको करने की दूसरों से मांग करना।
४. बड़ों का आदर सम्मान करना।
५. पड़ोसियों से भला व्यवहार करना।
६. छोटों को ममता देना।
७. अनाथों की सहायता करना।
८. भूखों को भोजन देना।
९. प्यासों को पानी पिलाना।
१०. पीड़ित जनों की सहायता करना।
११. नयन हीनों को मार्ग बताना।
१२. सत्य बोलना तथा सत्य गामियों के संग रहना।
१३. दान (खैरात) देना।
१४. अपने श्रम से आजीविका कमाना।
१५. अकारण जीव हत्या न करना।
१६. व्यभ्यचार से दूर रहना।
१७. कोई नशा न करना, विशेष कर मदिरा पान से बचना।
१८. चोरी डकैती से दूर रहना।
१९. लड़ाई झगड़े से दूर रहना।
२०. किसी पर भी अत्याचार न करना।
२१. किसी का अधिकार न छीनना।
२२. किसी को बुरा काम करते देख उसे रोकना।

इस प्रकार की और भी अनेक बातें हैं जो सभी धर्मों में अभीष्ट हैं और समाज को शान्तिमय बनाने हेतु अति आवश्यक हैं।

धर्म विवाद का दूर होना तो असम्भव है। अतः शान्ति मयी समाज में धर्म विवाद छेड़ना अनुचित है, अलबत्ता जो बातें सभी धर्मों में अभीष्ट हैं और वह समाज के लिये आवश्यक हैं, हमको चाहिए कि हम हर देशवासी से मांग करें कि हर व्यक्ति अपने धर्म पर रहते हुए उन तत्वों को अपनाकर समाज का जीवन सुखी बनाए। हमारा ख़याल है यही उद्देश्य है हजरत मौलाना अली मियां साहिब के मानवता सन्देश फोरम का हम उस से लाभ उठाएं। मानवता संदेश से सम्बन्धित उर्दू हिन्दी लिट्रेचर के लिये लिखें मानवता सन्देश फोरम पो० बाक्स न० ६३ नदवा, लखनऊ–०७

लेखक गण!
आयत अथवा हदीस बिना सन्दर्भ न लिखें। जो कविता इस्लामिक आस्था के विरूद्धहोगी छापी न जाएगी।
ऐतिहासिक बातों के सन्दर्भ भी अवश्य लिखें

पिछले अंक से आगे

परीक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण सुझाव

शमीम इकबाल

१. परीक्षा : विद्यार्थियों को चाहिए कि जब उनकी परीक्षायें होने वाली हों या पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद दोहराई चल रही हो तो इस अवधि में कक्षाओं का त्यागा जाना बुद्धमानी का काम नहीं होता है, यही उपयुक्त अवसर होता है जब कुछ विशेष बातें मालूम हो जाती हैं और सम्भावित प्रश्नों के बारे में भी कुछ संकेत मिल जाते हैं।

२. पंजीकरण :

परीक्षा से पूर्व इस बात की पुष्टि कर लेनी चाहिए कि परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये पंजीकरण हो चुका है? यदि नहीं तो इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए और पंजीकरण करा लेना चाहिए अन्यथा परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।

३. प्रवेश पत्र :

यदि पंजीकरण हो गया है तो निश्चित रूप से प्रवेश पत्र प्राप्त हो जायेगा, यदि किन्हीं कारणों से प्रवेश पत्र प्राप्त नहीं होता है तो परीक्षा अधीक्षक से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया जाये और उनसे आवश्यक निर्देश प्राप्त कर लिये जायें। ध्यान रहे कि प्रवेश पत्र किसी परीक्षा में सम्मिलित होने का अनुमति पत्र होता है।

४. समय सारिणी :

समय सारिणी के अनुसार ही पाठ्य को दोहरायें, ऐसा न हो परीक्षा किसी और विषय की हो और अध्ययन किसी अन्य विषय का किया जाये।

५. खान–पान :

परीक्षा की तैयारी ऐसे जोर–शोर से न करें कि खान–पान और आराम की सुधि ही न रहे। मस्तिष्क और शरीर दोनों का स्वस्थ होना परीक्षा के लिये आवश्यक होता है। अतः उचित खूराक और अधिक आराम आवश्यक होता है।

६. परीक्षा का दिनांक व स्थान :

परीक्षा का दिनांक, समय व स्थान सुनिश्चित कर लेना चाहिए। सम्बन्धित निर्देशों का पुनरावलोकन कर लेना चाहिए। परीक्षा के निर्धारित समय से २०–२५ मिनट पहले परीक्षा केन्द्र पर पहुंच जाना चाहिए ताकि थकावट अथवा घबराहट, यदि किसी प्रकार की हो तो, दूर की जा सके। ऐसी दशा में सहपाठियों अथवा सहकर्मियों से बातें करना काफी लाभप्रद होता है।

७. दोहराई :

परीक्षा की समय सारिणी के अनुसार ही दोहराई का कार्य किया जाना चाहिए परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि अन्तिम क्षणों तक पढ़ने अथवा दोहराई का काम न करें। लगातार पढ़ाई अधिक लाभदायक नहीं होती है, मरहले–वार पढ़ाई से अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

८. संदिग्ध प्रश्न :

परीक्षा में शंका वाले प्रश्नों को हल करना जुआ वाला जोखम मोल लेना होता है, ऐसी स्थिति में तीर–कभी–कभी ही अपने निशाने पर लगता है। यह जोखिम उसी समय लिया जाये जब निगेटिव मार्किंग न की जानी हो।

९. सामग्री :

किसी भी परीक्षा में भाग लेने के लिये पहले से सम्बन्धित विषय की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। जब परीक्षा कक्ष में प्रवेश करें तो उस समय किसी भी प्रकार का मानसिक तनाव न होना चाहिए। आवश्यक सामग्री जैसे कलम, पेन्सिल, रूमाल, स्केल, कैलकुलेटर तथा घड़ी आदि अथवा वह सामग्री जिनका उल्लेख निर्देशों में किया गया हो, साथ अवश्य ले आयें। वे वस्तुयें परीक्षा के मध्य सहायक होंगी।

१०. मन और विश्वास :

किसी प्रकार की परेशानी न महसूस करें, अपने विश्वास को बनाये रखें। परीक्षा के मध्य किसी सहयोगी या अन्य किसी से बातें न करें हो सकता है बातों से मन और भी चिन्तित हो जाये जो परीक्षा के लिये उपयुक्त नहीं होगा। आत्म विश्वास इस प्रकार का होना चाहिए "मैं पूरी तरह से तैयार हूं, और बहुत अच्छी परीक्षा दूंगा।" फिर भी यदि परीक्षा से पूर्व अथवा परीक्षा के दौरान किसी प्रकार की परेशानी महसूस कर रहे हों तो हताश होने की आवश्यकता नहीं है, अपने स्थान पर पीठ सीधी करके बैठ जायें और धीमी गति से कुछ गहरी–गहरी सांस लें,

इस प्रक्रिया से आराम अनुभव करेंगे।

११. प्रश्न पत्र :

प्रश्न पत्र प्राप्त होने पर उसका अध्ययन गम्भीरता से किया जाना चाहिए। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिये अनुमान लगा लेना चाहिए ताकि समय का सही बटवारा, प्रश्नों के आधार पर किया जा सके। साथ ही साथ प्रश्न–वार पाइन्ट भी नोट करते रहना चाहिए यही पाइन्ट उत्तर की व्याख्या करने में सहायक होंगे।

सही उत्तर तलाशने की तकनीकि :

किसी भी परीक्षा में प्रश्न, चाहे वह पूर्ण प्रश्न हो अथवा किसी प्रश्न का भाग हो, यदि संकल्प कर लिया जाये तो सभी प्रश्नों के उत्तर लिखे जा सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रकार के सभी प्रश्नों के उत्तर परीक्षार्थियों को आते ही हों,

यहां यह ऐसी तकनीकी पर विचार किया जायेगा जो उन प्रश्नों के हल तलाशने में सहायक सिद्ध होंगे। जिनके उत्तर देने में असुविधा हो रही हो। यद्यपि यह तकनीकी ऐसी नहीं होगी जो सम्पूर्ण विषय की जानकारी करा सके फिर भी कुछ–न–कुछ सहायता अवश्य मिल सकती है।

प्रश्न और प्रयत्न :

उन प्रश्नों को कतई नजर–अन्दाज न करें जो देखने में मुश्किल लग रहे हों, न ही ऐसे प्रश्नों पर इतना समय बरबाद किया जाये कि अन्य प्रश्नों के पढ़ने का अवसर ही न रह जाये। ऐसे प्रश्नों को कई बार शान्त मन से पढ़ें और उत्तर खोजने का प्रयत्न करें। ऐसा देखा गया है कि अपने तरीके से जो लोग मुश्किल सवालों का हल तलाशने का प्रयत्न करते हैं, वे लोग अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक मेधावी पाये गये हैं। प्रश्न में क्या बात कही गयी है इस पर दिल तथा दिमाग से सोच–समझ कर लिखने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिएं। मंजिल उन्हीं को मिलती है जो मंजिल की ओर चल पड़ते हैं। यदि परीक्षार्थी द्वारा उत्तर लिखने का प्रयत्न किया जायेगा तो बेशक लिख भी लेगा। ऐसा भी न होना चाहिए कि एक प्रश्न पर ही सारा समय नष्ट कर दिया जाए। आप देख लें कि थोड़ी सी कोशिश से यदि प्रश्न का उत्तर तलाश हो जाता है तो अति उत्तम अन्यथा आगे बढ़ें।

प्रश्न पर चिन्तन करना तथा विषय के आधार पर सम्बन्धित प्रश्न के लिये उपयुक्त उत्तर को तलाश करना ही ध्येय होना चाहिए। आत्म विश्वास के साथ यह सोचे कि "ऐसा कोई प्रश्न नहीं हो सकता जिसका उत्तर न हो" अतः प्रश्न को पढ़ें, प्रश्न से ही उत्तर की सम्भावनाओं को तलाश करें। किताब तथा नोट से रटे हुए उत्तर लिखना स्वयं इस बात की गवाही प्रस्तुत कर देता है कि यह भाषा रट्टू तोते की है। कभी कभी दो अलग–अलग प्रश्नों का एक ही उत्तर हो जाता है। इस प्रकार के उत्तर भ्रामक हो सकते हैं। अतः इस प्रकार के उत्तरों की अपनी अलग–अलग पहचान होनी चाहिए।

किसी भी प्रश्न का उत्तर तलाशने में बहुत ही आक्रामक होना चाहिए। अपनी सोच पर एक के बाद एक हमले लगातार किये जायें जब तक कोई न कोई नतीजा न निकल आये। कभी–कभी प्रश्न की भाषा भी समझ में नहीं आती ऐसी स्थिति में प्रश्नों को खण्ड करके समझने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। अपनी भाषा में अनुवाद कर के भी प्रश्न को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

किसी प्रश्न के हल करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा प्रयत्न भी न हो कि उसी एक प्रश्न से चिपक कर रह जायें। जितना उत्तर लिख लिया गया, ठीक है। अब आगे बढ़ें, आगे बढ़ने का अर्थ है अगला प्रश्न हल करें। दूसरे प्रश्न का प्रयत्न करने से पूर्व पिछले प्रश्न के तनाव से मुक्त हो लें। नये प्रश्न के लिये नये ढंग से सोच बनायें और उसे हल करने के लिये प्रयत्नशील हों।

कुछ प्रश्न कई वाक्यों पर आधारित होते हैं, जिनकी व्याख्या आवश्यक हो। इस प्रकार के प्रश्नों के लिये आवश्यक नहीं कि प्रश्न की तुलना में उत्तर भी लम्बा–चौड़ा होना चाहिए। उत्तर सूक्ष्म भी हो सकता है। किसी भी प्रश्न का उपयुक्त उत्तर वहीं हो सकता है जिस में परीक्षार्थी निम्न बातें परिलक्षित कर सके।

परिक्षार्थी ने प्रश्न भली भांति समझ लिया है?

वस्तुस्थिति को सुगठित रूप से प्रस्तुत कर सका है?

अपने विचार को स्पष्ट कर सका है?

ऐसी कोई विधि नहीं है जो परिक्षार्थी को ज्ञान का सही माप–दण्ड प्रस्तुत कर सके न ही ऐसी कोई तकनीक है जिससे उसके मस्तिष्क में ज्ञान का भण्डार भरा जा सके। कोई भी ऐसा बाहरी उपाय नहीं है जो परीक्षार्थी को परीक्षा के लिये परिपक्व बना सके। जो कुछ भी करना है

परीक्षार्थी को ही करना है।

परीक्षार्थी को चाहिए कि सम्बन्धित विषय का, चाहे वह अध्यापक द्वारा तैयार कराये गये नोट के रूप में अथवा किताबों से विषय तैयार किया गया हो या किताबों की सहायता से नोट तैयार किये गये हो, गहराई से अध्ययन किया जाये और इन्हीं विषय–वस्तु के आधार पर विभिन्न प्रकार से प्रश्न बनाने का अभ्यास किया जाये इससे विचारों की विविधता को बल मिलेगा तथा प्रश्नों को समझने में आसानी होगी।

निबन्धात्मक परीक्षा में यदि समय पर उचित नियन्त्रण न रखा जाये तो उन प्रश्नों के उत्तर लिखने में अधिक समय नष्ट हो सकता है, जो भली–भांति तैयार हों। बल्कि ऐसे प्रश्नों के उत्तर लिखने में अन्य प्रश्नों को दिये गये समय की अपेक्षा कम समय में पूरा करना चाहिए। प्रत्येक आसान प्रश्न से कुछ न कुछ समय अवश्य बचाना चाहिए ताकि उन प्रश्नों को हल करने में कुछ अधिक समय दे सकें जो कम तैयार हों।

यदि सभी प्रश्नों के हल करने के पश्चात समय बच जाता है तो उससे उत्तरों को दोहराया जा सकता है और इस दोहराई के समय में कुछ नये विचार भी आ सकते हैं जिनका समावेश किया जा सकता है।

प्रथम विचार का अंकन:

प्रश्न – पत्र प्राप्त होने पर प्रथम बार जब प्रश्न–पत्र पढ़ा जाये तो पढ़ते समय जो विचार मन में उभरें उन्हें बिन्दुओं के रूप में प्रश्न के बाईं ओर अंकित करते रहें इससे यह सुविधा होगी कि जब उत्तर लिखने का कार्य प्रारम्भ किया जायेगा तो उस समय सोच–विचार कर अधिक समय नहीं गवाना पड़ेगा। यह भी हो सकता है कि प्रश्न पढ़ते समय जो विचार बिन्दु के रूप में अंकित कर लिया है, उत्तर लिखते समय वे विचार याद न आयें। प्रश्नों के उत्तर लिखते समय तीव्र गति बनायें रखें और किसी प्रश्न में अधिक समय न लगायें।

उत्तर का गठन :

प्रश्नों को दुबारा पढ़ने से प्रश्न और अधिक स्पष्ट हो जाता है, प्रश्न–पत्र को पहली बार पढ़ने पर जो बिन्दु प्रश्नों के साथ अंकित किये गये थे, प्रश्न को दुबारा पढ़े जाने पर कुछ बिन्दु और भी बढ़ सकते हैं। अब इन्हीं बिन्दुओं को क्रम के अनुसार विस्तार के साथ लिख सकते हैं।

यदि उत्तर को एक–आध पैराग्राफ में लिखना है तो प्रश्न का उत्तर सीधे तरीके से अंकित कर दें अन्यथा यदि उत्तर को विस्तार के साथ अंकित किया जाना है तो इन बिन्दुओं को तार्किक क्रमबद्धता के आधार पर अंकित किया जाना चाहिए।

स्पष्ट उत्तर के तीन नियम:

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर को तीन प्रकार से लिखा जा सकता है –

१. किसी प्रश्न का उत्तर लिखने के लिये, उत्तर का प्रारम्भ प्रश्न के वाक्य से ही किया जा सकता है।

उदाहरण :

प्रश्न – मुगल सम्राज्य के पतन के क्या करण थे?

उत्तर : मुगल समाज के पतन के निम्न कारण थे।

१.

२.

इस प्रकार से प्रश्न से ही उत्तर का प्रारम्भ किया जा सकता है।

२. प्रश्न के उत्तर को पहले पैराग्राफ में समेटा जाये और बाद के पैराग्राफों में इसी बात को विस्तार से अंकित किया जाये। यह विवरण, सम्बन्धों, कारणों, घटनाओं, प्रभावों, दिनांक, नाम, उदाहरण अपवाद आदि पर आधारित होने चाहिए। इन बिन्दुओं का वर्णन उपयुक्त स्थान पर ही होना चाहिए।

३. उत्तर स्पष्ट और आसानी से समझ में आने वाला हो। विशेष प्रकार के परिवर्तन तथा भावों को स्पष्ट करने वाले शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिये किसी बात का आशय स्पष्ट करने के लिये लिखा जाये "जिस का आशय है कि ... "कार्य को निश्चित रूप से करने के लिये कहा जाये "कृपया सुनिश्चित करें कि ..."। तुलनात्मक भावों को प्रकट करने के लिये लिखा जायेगा "एक तरफ तो ..... दूसरी तरफ ..." आदि।

चालाकी बनाम नालायकी

बहुत से परीक्षार्थी निबन्धात्मक परीक्षाओं में प्रश्नों का उत्तर लिखते समय बड़ी चतुराई का परिचय देते हैं। वे समझते हैं कि उत्तर के रूप में एक–दो पृष्ठ लिख दिये जायें भले ही वास्तविकता से इसका दूर का भी सम्बन्ध न हो। उत्तर लिखना प्रश्न के अनुसार ही आरम्भ करेंगे परन्तु बीच में अनावश्यक बातों का भण्डार भर देंगे। रायटिंग भी बिगड़ी हुई होगी ताकि परीक्षक इसे पढ़ने की चेष्टा न करें और यह सोच लें कि इतना बड़ा उत्तर लिखा है तो ठीक ही होगा भले ही

उत्तर का मूल प्रश्न से दो–चार शब्दों के अलावा दूर–दूर का सम्बन्ध न हो। एक प्रश्न का उत्तर खराब लिखावट में, निम्न प्रकार लिखा था।

"भारत वर्ष में मुगल साम्राजय के पतन का कारण यह था कि उस समय फिल्म मुगले आजम नहीं बनी थी और अगर बनी भी होती तो उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था क्योंकि शाहजादा सलीम और कनीज अनार कली के प्रेम प्रसंग को बाहर के अतिरिक्त अकबर बादशाह ने स्वयं खूब उछाला था। इस प्रकार से जनता की सहानुभूति अकबर के साथ हो गई और अकबर महान बन गये परन्तु सलीम को जनता ने नकार दिया और यही बात मुगलों के पतन का करण बनी।"

यदि कोई परीक्षार्थी उक्त प्रकार से मनगढ़ंत कहानी बना सकता है तो बेशक वह प्रतिभावान है। ऐसे लोग अपनी शक्ति को परखें, अपनी प्रतिभा को जगायें। अगर उन्होंने एक बार भी सम्बन्धित विषय का अध्ययन किया होता तो वह उत्तर को, सम्बन्धित वस्तुस्थिति के साथ, बहुत अच्छे ढंग से लिख सकता था। यह सब तभी होता है जब परीक्षा की तैयार उचित प्रकार से की गयी हो और तभी परीक्षार्थी परीक्षा से पूर्व तथा परीक्षा के मध्य परेशानी तथा तनाव अनुभव करता है। ऐसे लोग उन कामों में भी छोटी–छोटी त्रुटियां करने लगते हैं जो नित–प्रति वे करते रहते हैं।

जो लोग किसी प्रतियोगिता से सम्बन्धित परीक्षा देने वाले होते हैं प्रायः मानसिक दबाव में घिरे हुए पाये गये हैं क्योंकि उन्हें अपने लक्ष्य की चिन्ता लगी रहती है कि क्या वे इसे प्राप्त कर सकेंगे? इसी के परिणाम स्वरूप दिल की धड़कने बढ़ जाती है, सांसों की गति बदल जाती है, हाथ पैरों में कपकपाहट, पसीना आना, जी मिचलाना आदि परेशानियां घेर लेती है और एकाग्रता समाप्त हो जाती है। ऐसी दशा में निराशाजनक बातें सोचने लगते हैं और अपने को असहाय महसूस करने लगते हैं। परीक्षा के प्रयत्नों को भुला कर विभिनन प्रकार की चिन्ताओं से घिर जाते हैं।

इसी प्रकार की परिस्थितियों से परीक्षार्थी तभी घिरता है जब वह परीक्षा की तैयारी उचित प्रकार से न कर सके। किसी भी परीक्षा के लिये उचित एवं समयबद्ध अध्ययन नितान्त आवश्यक होता है। परीक्षा उत्तीर्ण करने की इच्छाशक्ति का बहुत महत्व होता है। शहरों में कई ऐसी शिक्षण संस्थायें हैं जहां से उचित प्रकार से अध्ययन करने की विद्या सीखी जा सकती है। समय बद्ध अध्ययन और दोहराई किसी भी परीक्षा पास करने की जमानत है।

"थोड़ी सी लापरवाही जिन्दगी भर की परेशानी"; यह नारा आपने सुना होगा। यदि परिश्रम में थोड़ी भी कमी रह गई तो परीक्षा पास नहीं की जा सकती। और यदि पास भी हो गये तो आवश्यक नहीं है कि चयन भी कर लिये जाये क्योंकि कम्पटीशन बहुत बढ़ गया है। अधिक परिश्रम करने तथा अधिक अंक पाने वाले लोग भी हैं।

परीक्षा और कम्प्यूटर :

पिछले कई वर्षों से प्रायः परीक्षा का कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया जा रहा है। कम्प्यूटर से उत्तर पुस्तिकायें जांची भी जाती हैं और परीक्षाफल भी छापे जाते हैं। एक उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन करने में कम्प्यूटर मात्र एक सेकेण्ड का समय लगाता है। इस प्रकार दस हजार उत्तर पुस्तिकाओं का मात्र दो घण्टे सात मिनट में परिणाम बन सकता है। निबन्धात्मक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकायें कम्प्यूटर द्वारा नहीं जांची जा सकती है केवल रिजल्ट बनाये जा सकते हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकायें ही कम्प्यूटर द्वारा जांची जा सकती है। यह उत्तर पुस्तिकाएं विशेष प्रकार के कागज की और विशेष प्रकार की छपाई की होती हैं। इनपर उत्तर भी विशेष प्रकार से अंकित किये जाते हैं। उत्तर पुस्तिका में वृत्ताकार अथवा वर्गाकार खाने बने होते हैं किसी प्रश्न के सही उत्तर के लिये सम्बन्धित गोले अथवा वर्ग को डाट–पेन अथवा एच.बी. पेंसिल से (जैसे निर्देश हो) भरना होता है।

उत्तर पुस्तिका में उत्तर अंकित करना एक विशेष प्रकार का कार्य होता है जिसे ध्यानपूर्वक करना चाहिए। उत्तर पुस्तिका पर दो प्रकार का विवरण अंकित करना चाहिए।

१. परीक्षार्थी के विवरण का भागः

इस भाग में परीक्षार्थी का रोल नम्बर, नाम, जन्म तिथि,वर्ग आदि अंकित किया जाता है।

२. प्रश्नों के उत्तर वाला भागः

वस्तुनिष्ठ प्रकार की परीक्षाओं में प्रश्न पत्र में प्रत्येक प्रश्न के नीचे चार–अथवा पांच उत्तर *दिये होते हैं* (पूरे प्रश्न पत्र में प्रत्येक प्रश्न के सम्भावित उत्तरों की संख्या समान होती है। ऐसा नहीं है कि एक ही प्रश्न–पत्र में कुछ प्रश्नों के सम्भावित उत्तर चार तथा कुछ में पांच हो या अन्य कोई संख्या हो।) इन्हीं सम्भावित उत्तरों में से सही उत्तर की संख्या वाला गोला

या वर्ग का पूरा भाग रंग दिया जाता है। खानों को रंगने का कार्य सुचारू रूप से किया जाना चाहिए। कोई भी स्थान ऐसा न बचना चाहिए जो रंगने से रह जाये।

इसी प्रकार रोल नम्बर, नाम आदि विवरण वाले भाग के खानों को भी पूर्णतः भरा जाना चाहिए। इस भाग में पहले रोल नम्बर तथा नाम आदि अंकित किया जाता है तत्पश्चात् नीचे बने सम्बन्धित खानों को काला किया जाता है।

खानों को रंगने अथवा काला करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

१. खानों को इस तरह से भरे अथवा रंगे कि उसमें लिखे अक्षर दिखाई न दें।

२. खानों का कोई भी छोटा से छोटा भाग रिक्त न छूटना चाहिए।

३. खानों को काला करते समय घेरे के बाहर पेन न निकलने पाये।

४. रंगे जाने वाले खानों को छोड़कर, उत्तर पुस्तिका के किसी भी भाग पर पेन अथवा पेन्सिल का छोटा अथवा बड़ा किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह न लगना चाहिए।

५. प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर होता है अतः आवश्यक है कि सोच–समझ कर सही उत्तर वाला एक ही खाना रंगना चाहिए।

६. उत्तर पुस्तिका विशेष कागज की बनाई जाती है अतः इसे किसी भी स्थान पर मोड़ना न चाहिए, कोने भी न मुड़ने पायें और न ही फटने पायें।

७. उत्तर पुस्तिका पर किसी प्रकार का भी अंकन करने से पूर्व परीक्षा से सम्बन्धित सभी निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए। कभी–कभी एक उत्तर गलत होने पर दूसरा उत्तर लिखने हेतु विशेष निर्देश रहते हैं।

८. इस बात का ध्यान रहे कि गलत उत्तर को ब्लेड आदि से खुरच कर सही उत्तर के लिये दूसरा गोला रंगा जाना परीक्षार्थी के लिये हितकर नहीं होगा। इस प्रक्रिया से परीक्षार्थी को लाभ तो कदापि नहीं हो सकता हानि अधिक हो सकती है।

९. यदि किसी प्रकार का स्याही का निशाना उत्तर पुस्तिका पर लग गया है तो उसे ब्लेड से सावधानी पूर्वक खुरच कर मिटाया जा सकता है परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि उत्तर पुस्तिका फटने न पाये।

मैंने जब यह लेख लिखना आरम्भ किया तो मेरा कतई यह तात्पर्य नहीं था कि इस लेख को पढ़ने वाला प्रत्येक परीक्षार्थी हर परीक्षा में पास हो जायेगा। परीक्षा वही पास कर पाता है जिसके समक्ष कोई लक्ष्य हो और वह उसे प्राप्त करने के लिये पक्का इरादा बना चुका हो। फारसी की यह कहावत बड़ी मशहूर है – हिम्मते मरदां, मददे खुदा।

(पृष्ठ ३१ का शेष)

कि पानी पर अपना असा मारिये, फिर आप को रास्ता मिलेगा वरना हरगिज रास्ता न मिलेगा।

एक किस्सा हजरत मरयम अ० का है कि खजूर के पेड़ के नीचे आप भूखी बैठी होती हैं। हामिला हैं। हुक्म होता है कि इसे हिलाओ। वह अर्ज करती हैं कि मैं इतनी कमजोर हूं, कैसे हिला सकती हूं। आखिर में हुक्म होता है कि हाथ तो लगा सकती हो, हाथ तो लगाओ। जैसे ही हाथ लगाती हैं खजूरें गिरना शुरू हो जाती हैं।

कहने का मतलब यह है कि आप में हरकत व तहरीक नहीं है तो आप में कुछ भी नही है।

हमारा मजहब इल्म व अमल का मजहब है, सिर्फ इल्म हासिल कर लें और अमल न करें तो हम नामुकम्मल हैं और हम कुछ नहीं हासिल कर सकते।

(उर्दू मासिक हिदायत जयपुर मई २००८ से साभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

कविता

हफीज मेरठी

तुम्हारा खून बहा है जहां–जहां लोगो
मगर ये खून न जाएगा रायगां लोगो
हमीं बनेंगे तुम्हारे भी तर्जुमां लोगो
जरा तुम अश्क तो छलकाओ बेजुबां लोगो
खुदा का शुक्र कि महफिल में जिक्रे दार छिड़ा
हमें तो आने लगी थीं जमाहियां लोगो
निकालने हैं तुम्हें खुद ही पांव के कांटे
पलट के तुम को न देखेगा कारवां लोगो
लगी थी ठेस ही कुछ तेजो–तुन्द लहजों की
बिखर के रह गई शीशा– मिजाजियां लोगो
बगैर मोजिजा यूं फूटते नहीं चश्मे
कोई रगड़ता रहे लाख एड़ियां लोगो
जो चाहते हो कि तारीख ताबनाक बने
मिला दो खाक में अपनी जवानियां लोगो
सितम के बाद करम के पयाम आएंगे
मकाम ये बड़ा नाजुक है सख्तजां लोगो
वहीं–वहीं नजर आया है सर बुलन्द हफीज
पड़ी है सर की जरूरत जहां–जहां लोगो

सच्चाई नजात देती है झूट हलाक करता है।

इस्लाम और एकता

शमशेर आलम फतेहपुरी

आज यदि हम मुसलमानों की स्थिति का सिंहावलोकन करें तो हम को ज्ञात होगा कि हम खुदा के आदेश एवं अन्तिम सन्देष्टा की शिक्षा को भूल गये हैं। हमारे मध्य न तो एकता है और ना ही संगठन, जब यह बातें हमारे मध्य उपस्थित ही नहीं तो हम कैसे बलवान हो सकते हैं? यही कारण है कि आज सारे संसार के मुसलमान हीनता एवं अपमान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज मुसलमानों की स्थिति बहुत ही खेद जनक एवं आश्चर्यजनक होती जा रही है। आज इस्लाम एवं मुसलमानों पर चारों ओर से आक्रामण हो रहे हैं और मुसलमानों को अपना देश छोड़ने पर विवश किया जा रहा है। आज मुसलमानों को गाजर मूली की भांति काटा जा रहा है, उनके खून की होली खेली जा रही है जबकि कल तक यही मुसलमान थे जो आधे विश्व पर राज्य करते थे। यहां पर सवाल पैदा होता है कि आखिर मुसलमानों को ऐसे दिन क्यों देखने पड़े इसके क्या कारण हैं? जिन्होंने मुसलमानों के उत्थान को पतन से और सत्ता को पराधीनता से बदल दिया है। इस प्रश्न का उत्तर केवल यही है कि आज मुसलमान खुदा के आदेशों एवं अंतिम संदेष्टा की शिक्षाओं को भूल गये हैं और एकता एवं संयोग को अपने जीवन से निकाल दिया है इसके विपरीत आपसी भेद भाव और आपसी विरोध एवं अव्यवस्था (इंतिशार) को अपने जीवन में रचा बसा लिया है। जब कि अल्लाह स्वयं ही अपनी पवित्र पुस्तक में कहता है कि "ऐ लोगो तुम अल्लाह एवं उसके अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करो (४:५६) और दूसरी जगह मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए कहता है "हे मोमिनो तुम अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ लो (तुम संगठित होकर जीवन व्यतीत करो) तथा तितर बितर न हो और याद करो अल्लाह की उस नेअमत को कि जब तुम लोग एक दूसरे के दुशमन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ा तो तुम भाई–भाई हो गये। (सूर आलेइमरान आयत नं १:३)

इस्लाम एकता एवं भाई चारगी का धर्म है। वह हमे आपस में संगठित रहने की शिक्षा देता है तथा संपूर्ण मानव जाति के साथ भाई चारगी व प्रेम का आदेश देता है जैसा कि पवित्र पुस्तक कुरआन मजीद में है "हे मोमिनों तुम आपस में भाई–भाई हो,"(४६:१०) और खुद अन्तिम संदेष्टा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके अनुयाइयों ने उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। वे एक दूसरे के साथ इस प्रकार जीवन व्यतीत करते थे कि शहरी देहाती काले गोरे, धनी एवं निर्धन के मध्य कोई भेद भाव नहीं था वह लोग सब एक शरीर के समान थे इसी कारण अल्लाह ने उनको सफलता प्रदान की तथा शत्रुओं के विरूद्ध उनकी सहायता की रूस एवं फ्रांस जैसे महान राज्य भी उनका नाम सुन कर कांप उठते थे। कैसरो किसरा के मुकुट भी उनके पैरों तले थे। ऐसा क्यों था? यह केवल इस कारण था कि उन्होंने दृढ़ रूप से संगठित रहने की सौगन्ध खा रखी थी।

हजरत अबू मूसा अशअरी कहते हैं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फरमाया कि "एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये एक निर्मित भवन के समान है कि उसका एक भाग दूसरे भाग को बलवान बनाता है। (बुखारी व मुस्लिम)

परन्तु आज हम भिन्न भिन्न टुकड़ियों में बट गये हैं हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी, सिद्दीकी, अन्सारी ही में नहीं यद्यपि धनी एवं निर्धन के मध्य भी भेद भाव करना प्रारम्भ कर दिया गया है। जब कि हमारा ईश्वर एक हमारे पूर्वज एक हैं हमारी पुस्तक एक है।

अब समय आ गया है कि हम संगठित होकर जीवन व्यतीत करें तथा अखण्डता की दीवार गिरा दें एवं अंतिम संदेष्टा के उस आदेश को अपने जीवन में रचा बसा लें कि ईमान वालों का उदाहरण दयालुता एवं संगठन में एक शरीर के समान है कि यदि शरीर के एक भाग को कोई कष्ट पहुंचता है तो सम्पूर्ण शरीर उस पीड़ा का अनुभव करता है।

जहां आयत का अनुवाद लिखें वहीं ब्रेकट में सन्दर्भ लिखें इसी प्रकार हदीस का सन्दर्भ लिखें।

कामयाबी की मास्टर की (शाहे कलीद)

जवाबदेही और मन्सूबः बन्दी

जस्टिस सुहेल एजाज सिद्दीकी
चेयर मैन, अल्पसंख्यक शैक्षिक आयोग

हमारे मुल्क में जो मदारिस सदियों से चले आ रहे हैं, वह सिविल सर्विस निजाम की पैदावार थे क्योंकि मुसलमान दौरे हुकूमत में शरअी अदालतें थीं। इस्लामी कवानीन के मुताबिक इन्साफ किया जाता था, चूंकि फिक्ह (**Jurisprudence**) और उसके बुनियादी उसूलों का जानना जरूरी था, इस लिये मदारिस में भी इस की तालीम दी जाती थी और इस के साथ–साथ अस्री उलूम भी पढ़ाये जाते थे, यही वजह थी कि मदारिस से खतीब भी निकलते थे, मुफती भी निकलते थे और मुन्तजिम भी निकलते थे, लेकिन अंग्रेजों की हुकूमत आने के बाद मदारिस के इस निसाब (पाठ्यक्रम) की इफादियत (नफा) खत्म हो गयी। कुछ मदारिस को छोड़कर किसी मदरसः ने कुर्आन मजीद को मुकम्मल अपने पाठ्यक्रम में दाखिल नहीं किया। कुछ सूरतों को मुकम्मल तौर पर शामिले निसाब किया गया तो कुछ सूरतों के सिर्फ तर्जुमे पर इक्तिफा किया गया।

दूसरा निजामे तालीम (शिक्षा व्यवस्था) जो अंग्रेजों ने शुरू किया वह ऐसा था कि लोग खुद अपना मुल्क फतेह करके दुश्मनों के हवाले कर दें, यही निजामे तालीम अब तक चला आ रहा है। अब हमारे सामने सवाल यह है कि हमारा निजामे तालीम कैसा हो? इन्हीं सवालों को ध्यान में रखते हुए हमें निजामे तालीम को तैयार करना होगा। हम अगर यह चाहते हैं कि सत्यनिष्ठ और ईमानदार लोग पैदा हों तो इस के लिये वह तालीम देना होगी जिस में इस्लामी रंग शामिल हो। निजाम तालीम का कितना गहरा असर पड़ता है इस की मिसाल देना चाहूंगा। हमारे पड़ोस में जो कुछ हो रहा है, उसकी सारी जिम्मेदारी वहां के निजामे तालीम पर है।

लेहाजा पहले यह तय करना होगा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था कैसी हो? आदमियत का नक्शा कैसा होना चाहिए? जो पढ़कर निकलने वाले हों वह किन किन सलाहियतों के मालिक हों। वह नक्शा हरगिज न होना चाहिए जिसको अंग्रेज हिन्दुस्तान में लेकर आये थे। उन के यहां तालीम के दो नक्शे थे अपने मुल्क में तालीम का जो नक्शा था वह अलग था और हिन्दुस्तान में तालीम का जो नक्शा था और आज तक जारी है उस का नक्शा अलग था।

अस्री (दुनयवी) तालीम का मतलब यह है कि दुनिया को देखें और समझें और यह समझें कि हमें किस लिये पैदा किया गया है और दुनिया में किस तरह रहना है और अपने घर व कारोबार को चलाना है। दीनी तालीम का मतलब यह है कि दुनिया को दीनी नुक्त–ए–नजर से देखा जाये और दीन की हिदायत के मुताबिक अपना काम किया जाये। दीनी व अस्री उलूम की तफरीक (भेद–भाव) ईसाइयत में तो है। बल्कि दूसरे धर्मों में भी इसका वजूद है लेकिन इस्लाम में इसकी कोई कल्पना नहीं है। रुहबानियत का तसव्वुर हमारे यहां नहीं है बल्कि हमारे यहां रब्बानियत का तसव्वुर है। रुहबानियत का मतलब है नफ़्स को कुचल देना, दबा डालना जब कि रब्बानियत का मतलब है नफ़्स पर काबू रखना। इस्लाम रब्बानियत की तालीम देता है, इसलिये कहा गया है कि दुनिया आखिरत की खेती है जैसा यहां बोयेंगे वैसा ही फल आखिरत में मिलेगा। जब मजहबे इस्लाम यह कहता है तो वह दीनी व दुनियवी तालीम की तफरीक कैसे कर सकता है। और यही वजह थी कि जब तक हम में यह तफरीक नहीं थी हमने छः सौ साल तक योरप वालों को पढ़ाया। इन्हीं मदारिस में दीनी तालीम के साथ–साथ अस्री उलूम भी पढ़ाये जाते थे। दोनों तालीम एक साथ चलती थी। हम ने एक गलती की कि सातवीं सदी में आकर दीनी व अस्री उलूम का **Confronation** (आमने सामने) करा दिया और यह तफरीक वहीं से शुरू हुई। चन्द लोगों की जानिब से यह फितना वजूद में आ गया जिस का नतीजा यह हुआ कि हमारी इल्म दोस्ती खत्म हो गयी। हम सात सौ साल पहले मदारिस में जहां थे आज भी वही है जब कि वक्त बहुत आगे निकल चुका है। हम मदारिस की

तालीम को वक्त की चाल और रफतार से जोड़ न सके। वक्त तेजी से आगे निकल गया,हम वहीं रहे। एक बात याद रखना चाहिए कि जो तालीम समय और जीवन की चाल के साथ नहीं है वह तालीम कभी कामयाब नहीं हो सकती। इस लिये एक इन्कलाबी (क्रान्तिकारी) कदम उठाना होगा। एक ऐसी नस्ल तैयार करना होगी जो इस्लामियात का रंग रखती हो, खुदा परस्त हो और हमारी इज्तेमाओ जिन्दगी के पूरे कारखाने को, हमारी तहजीब व तमद्दुन (सभ्यता और संस्कृति) और दीनी उसूलों के मुताबिक चलाने की अहल हो और अगर ऐसी कौम पैदा न कर सके तो हम वहीं रहेंगे। इसी तरह सच्चर कमेटियां बनती रहेंगी, रिपोर्टें आती रहेंगी और गर्द खाती रहेंगी।

हम उम्मते वस्त कहलाते हैं लेकिन न तो हम में कहीं मियानः रवी दिखाई देती है और न कहीं हम में ऐतदाल पसन्दी दिखाई देती है। अगर हम को कुछ सहारा मिल जाता है तो हम पूरे जोर व शोर के साथ आगे बढ़ते हैं और बहक जाते हैं और भटक जाते हैं तो अपना होश खो बैठते हैं। एक शायर ने कहा है –

उरूज था तो हवाओं से बात करते थे

जवाल है तो जमीं पर जगह नहीं मिलती।

दूसरी बात वह है जिस पर कोई ध्यान नहीं देता। मैं भी आऊंगा, कुछ देर बोलूंगा। और चला जाऊंगा। लेकिन हमारे यहां इत्तेहाद (एकता) की कमी है। इस्लाम इज्तेमाइयत की तालीम देता है, और हम तालीम देते हैं इनफिरादीयत की, इस इनफिरादीयत ने हमारे अन्दर बिखराव और गुमराही को पैदा कर दिया है, और आज हाल यह है कि :

गुजरे थे हुसैन इब्ने अली रात इधर से,

हम में से मगर कोई भी निकला नहीं घर से।

यह है हमारी एकता, लेकिन अभी भी कुछ नहीं गया है। आप सब हजरात मिलकर पहले अपना निजामे तालीम तय कीजिए। यह सदी नालेज की सदी है। जिस कौम के पास, जिस मुल्क के पास, जितनी मालूमात है, जितनी नालेज है, वह कौम उतनी ही खुश और ताकतवर है। आज कल लोगों में जोश है शैक्षिक संस्थाओं को खोलने का लेकिन यकीन जानिये वह पचास फीसदी टीचिंग शाप होती हैं, तालीमी इदारे नहीं होते। एक अच्छा तालीमी इदारा बनाने के लिये **Dedicated** और **Devoted** पर्सन्स की जरूरत होती है, मेरे हिसाब से यहां ऐसे ही टीचर्स की जरूरत है। मेरे हिसाब से **An Angry And Hungry Teacher is worse than foreign Enemy.**

हमारे मदारिस व मकातिब में जो टीचर्स पढ़ाते हैं उनको हम मोली साहब कहकर पुकारते हैं। कितना अजीम काम वह करते हैं लेकिन हमारे समाज ने उनको मौलाना या मौलवी साहब से मोली साहब बना दिया। एक वक्त का खाना अहमद के यहां से आता है तो दूसरे वक्त का खाना महमूद के यहां से आता है और इन्तेहाई जिल्लत के साथ उसे खाना दिया जाता है, कोई कहता है कि मोली साहब को बड़ी भूख लगती है, कोई कहता है जब देखो चले आते हैं। अब खुद तय करने की बात है ऐसा मौलवी और आलिम दूसरों को क्या तालीम देगा।

मुल्क जापान की मैं मिसाल दूंगा। अमरीकी बम्बारी के नतीजे में जब यह मुल्क तबाह व बरबाद हो गया तो उस समय यहां के हुक्मरां के सामने सब से बड़ी समस्या यह थी कि देश वासियों को कैसे खड़ा किया जाय। उन्होंने यह तरीका इख्तियार किया कि टीचरों की तनख्वाहें अफसरों से बल्कि अन्य कर्मचारियों से ज्यादा कर दीं जिसका नतीजा यह हुआ कि आज यह मुल्क इतनी बड़ी आर्थिक शक्ति बन गया कि अमरीका के मुकाबले में खड़ा हो गया। इस का पूरा पूरा क्रेडिट वहां के टीचर्स को जाता है। हमारे यहां बिल्कुल इस का उल्टा मामला है। यहां तनख्वाह के कागज पर १०,००० पर दस्तखत करवाते हैं जब कि उस को सिर्फ चार हजार रूपये दिये जाते हैं। इस लिये जो भी इदारा कायम किया जाये उसका एक लक्ष्य हो। हमारी एक तहजीब है, एक लक्ष्य है इस से अलग नहीं हो सकते। अगर हम ऐसी तालीम देते हैं जिस में इस्लामियात और अखलाकियात नहीं है तो वह तालीम बेकार और गैर मुफीद है। हम निकम्मे और नाकारा लोग पैदा करने वाले होंगे, मुसलमान की पहचान उसका अखलाक और दीनदारी है। पहले मुसलमान इसी से जाने और पहचाने जाते थे। और इज्जत पाते थे। आज अफसोस कि वही सबसे ज्यादा इससे दूर हैं। दूसरी कौमों ने हमारे अखलाक अपना लिये। आज वह आगे हैं। सबसे पहले तालीम के मकसद पर गौर करना है। तालीम का मकसद यह न होना चाहिए कि बच्चों के कन्धों पर ढेर सारी किताबें

लाद दी जायें या किसी परीक्षा में विशिष्ट अंकों से पास हो जाय, बल्कि तालीम का मकसद किरदार साजी होना चाहिए। हम बच्चों को ऐसी तालीम दें जिस से वह ईमानदार और बाज़मीर (अन्तःकरण वाले) हों, हलाल व हराम के फर्क को समझने का नाम ही इस्लामियात है। इस्लामियात का मतलब हरगिज यह नहीं कि सुबह से शाम तक सिर्फ नमाज पढ़ते रहें।

यही एक मजहब है जिस ने कदम कदम पर हमारी रहनुमाई की है। हर काम का सही तरीका हमें बताया है। दुनिया का कोई मजहब ऐसा नहीं है जो यह बताता हो कि घर में कैसे दाखिल होना चाहिए, घर से कैसे निकलें, कैसे खाना खायें और कैसे सोयें, दूसरे से किस तरह मिलें, पड़ोसियों के साथ क्या व्यवहार किया जाये। इस्लाम ने एक मुकम्मल कोड आफ कन्डक्ट दिया है। एक निजामे जिन्दगी हमें दिया है और इसी निजामे जिन्दगी के साथ अल्लाह ने यह भी कहा है कि आप अल्लाह तआला की रस्सी को मजबूती से पकड़े रहें। अगर एक हाथ में अल्लाह की रस्सी होगी तो दूसरे हाथ में न तो पिस्तौल हो सकता है और न ही बम हो सकता है। इस फर्क को समझिये और यही हमारा तालीम का मकसद और मेआर भी होना चाहिए।

मैंने पूरे मुल्क का सफर किया है, लोगों से मिला हूं, सैकड़ों चेहरों को देखा है और दर्द महसूस किया है। मैंने यह भी देखा है कि लोग मकड़ी के जाले की तरह तारीख को अपने सीने से चिपकाये रहते हैं। हमारी पोशाकें जिनपर हमारे उरूज की दास्तानें लिखी हुई थीं वह आज अजायब खानों की जीनत बन गई है हमें अपना मिल्ली तशख्खुस (सामुदायिक पहचान विशिष्टता) बाकी रखना है मगर इसके साथ–साथ एक जिम्मेदार मुसलमान भी बनना है।

अगर इस देश में गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करना है तो हमें अपनी सलाहियतों (क्षमताओं) का सबूत देना होगा। जाहिल और निकम्मे रहकर इज्जत व मर्तबा नहीं पा सकते।

जो भी इदारे (संस्थान) कायम किये जायें उन में तालीम के मकसद के साथ–साथ उन में जाब सीकर्स के बजाय जाब जनरेटर पैदा कीजिए। लेकिन मसुलमान कौम बहुत जजबाती कौम है और इस जजबातियत में वह छोटे मोटे खिलौने से भी बहल जाया करती है। वह अपनी सोचों को दुरूस्त कर लें तो इनको कोई खिलौनों से नहीं बहला सकता। मैं एक मिसाल देता हूं कि आवाज उठती है कि रिजरवेशन मिलना चाहिए। मैं यह कहूंगा कि आप पढ़ेंगे ही नहीं तो रिजरवेशन किस बात का। अगर आप पढ़ते हैं और आप में सलाहियत है तो आप को किसी रिजर्वेशन की जरूरत नहीं है। किसी बैसाखी की जरूरत नहीं। आप सरकार को इस नजर से न देखें कि वह आपको बैसाखी दे दे। बैसाखी से आप चल तो सकते हैं दौड़ नहीं सकते और यह जमाना दौड़ का है। मुकाबले की दौड़ है हर शख्स दौड़ रहा है। हर मुल्क आगे बढ़ रहा है, उस के यहां नये–नये उलूम (नालेज) आ रहे हैं।

अल्पसंख्यक को बहुसंख्यक के मुकाबले में आने के लिये ज्यादा तेज दौड़ना पड़ेगा। ज्यादा मेहनत करनी होगी। उन पर निर्भर न कीजिये और हर चीज का इल्जाम उन पर न लगाया जाये। पहले यह देखा जाये कि हम ने क्या किया? और हमारी जिम्मेदारी कितनी है? हम सिर्फ इतिहास और सामाजिक विज्ञान पढ़कर यह उम्मीद करें कि बड़े से बड़ा जाब मिल जाये यह नामुम्किन है हमें टेक्नीशियन की जरूरत है। मैं बहुत अदब से कहता हूं कि अब हमारी कौम को बावरचियों की दर्जियों की और कव्वालों की जरूरत नहीं है। अब हमारी कौम को डाक्टरों और इंजीनियरों की जरूरत है। माहिरीन फन की जरूरत है। अगर ऐसा न कर सके तो हम जमाने से पिछड़ जायेंगे। हमें उठना होगा और समय की मांग के अनुसार मेहनत व कोशिश करना होगी और इसके बाद अल्लाह पर भरोसा रखना होगा।

एक मिसाल देना चाहूंगा कि जब मूसा अ० और उनकी कौम का पीछा फिरऔन और उसका लशकर कर रहा होता है, आप समन्दर तक पहुंच जाते हैं और हालत यह होती है कि सामने समन्दर है और पीछे फिरऔन का लशकर है आगे बढ़ते हैं तो समन्दर में डूब जाने का खतरा है और पीछे मुड़ते हैं तो फिरऔन का लशकर कत्ल कर देगा। अल्लाह तआला चाहते तो उस वक्त रास्ता दे देते जब मूसा अलै० समन्दर तक पहुंचे थे लेकिन अल्लाह की कुदरत को जाहिर करने के लिये, अल्लाह तआला का हुक्म होता है कि ऐ मूसा अ० अपने असा को पानी पर मारो। जब आप पानी पर असा को मारते हैं तो रास्ता हो जाता है। अगर आप असा न मारते तो रास्ता न होता। यही बात मैं आप हजरात से कहता हूं

(शेष पृष्ठ २७ पर)

देश बन्धुओं से सम्बोधन

(बड़े लेख का सारांश)

उज़्मा भोपाली

देश भाइयो! हम सब का विधाता एक, हमारी रगों में खून एक, हम सब का बाप एक, मां एक, हम सब एक मां बाप की सन्तान, हम सब की मंजिल भी एक, अर्थात हम सब को लौट कर एक ही द्वार पर जाना है, हम सब का उद्देश्य भी एक, अर्थात मोक्ष प्राप्त, तो फिर आइये देखें कि हमारे रास्ते भिन्न क्यों हैं?

धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने यह धरती बनाई इस को नाना प्रकार की वस्तुओं से सजाया फिर इस पर अपनी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मानव को बसाया और समस्त संसार की सारी वस्तुएं नदी, पहाड़, जंगल, पशु, पक्षी, सूर्य, चन्द्रमा सब को इस मानव (इन्सान) के लिये बनाया परन्तु इस मानव को अपनी उपासना के लिये बनाया तो अपने परिचय और अपनी उपासना के नियम बताने के लिये अपने सन्देष्टाओं का सिलसिला चलाया जो हर क्षेत्र तथा हर काल में आते रहे, उन्हीं पैगम्बरों (संदेष्टाओं) द्वारा हम को ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह ने इन्सान (मानव) को पैदा करना चाहा तो फिरिश्तों से कहा कि मैं इस धरती पर अपना प्रतिनिधि बनाना चाहता हूं। फिरिश्ते जो नूर (प्रकाश) से बनाए गये हैं और पाप रहित हैं (पाप रहित वह है जो किसी बात में भी ईश अवज्ञा न करे) वह बोले हे प्रभु! क्या आप इस धरती पर ऐसे को पैदा करेंगे जो इस पर भ्रष्टाचार तथा रक्त पात करे (किसी प्रकार उनको इस का भय लगा) हम लोग तो आप की प्रशन्सा तथा पवित्रता के जप में लगे ही हैं। अल्लाह ने कहा "मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते हो।"

अल्लाह ने पहले मनुष्य आदम (अ०) को मिट्टी से बनाकर उन में जीव डाला और आदेश दिया कि तुम सब आदम को सज्दा करो सब नतमस्तक हो गये उन फिरिश्तों के बीच अजाजील भी था, जो जिन्न था उस ने सजदा न किया कारण पूछने पर कहा आदम मिट्टी से है मैं आग से मैं इनसे श्रेष्ठ हूं, अपने घमण्ड में यह न समझ पाया कि अपने विधाता की अवज्ञा कर रहा है इस अवज्ञा पर वह धुतकार दिया गया और शैतान हो गया।

शैतान ने अल्लाह से प्रार्थना की कि मुझे कियामत तक की छूट मिले मैं आदम की सन्तान से अवज्ञा करवा कर अपना बदला लूंगा। अल्लाह की मर्जी उस की मसलहत उसको छूट दे दी, लेकिन यह भी कह दिया कि मेरे नेक बन्दों पर तेरा वश न चलेगा, और जिसे तू बहकावे गा अगर वह हमारी ओर झाकेंगे और क्षमा चाहेंगे तो उनको क्षमा कर दूंगा। यह कथा विस्तार से पवित्र कुर्आन में उल्लेखित है।

वास्तव में मानव के भटकने का कारण यही शैतान की शत्रुता और बुरे नफ्स की स्वतंत्रता है। शैतान मानव को विधाता से हटा कर दूसरों के आगे झुकाता है, किसी पेड़ के सामने, किसी पहाड़ के सामने, नदी तथा समुद्र के सामने, सूर्य तथा चन्द्रमा के सामने जब कि स्वयं सृष्टा का आदेश है कि सजदा तथा उपासना सृष्टि की नहीं सृष्टि के रचयता केवल सृष्टा की करना है तो फिर उस का विरोध क्यों? रहा यह विचार की कण–कण में ईश्वर है यह अद्वेतवाद का गलत विचार है, इस विचार के अनुसार तो सभी ईश्वर होंगे, फिर कौन उपास्य और कौन उपासक? कहना यूं चाहिए कि कण कण ईश्वर की दृष्टि में है कुछ उससे छुपा नहीं और यूं कहें कि :

कण कण हमें बताता है
केवल एक विधाता है
हमें जर्रा जर्रा पता दे रहा है
खुदा है, खुदा है, खुदा है

प्रिय सज्जनों ! विधाता की सब से बड़ी अवज्ञा किसी को उसका साझी बनाना है। आज भी जब कोई अपने जीवन साथी का हक किसी और को देता है तो समाज उस से घृणा करता है। एक अच्छा इन्सान ऐसे लोगों का मुंह भी नहीं देखना चाहता जो अपने जीवन साथी का हक किसी और को देता है, फिर यदि कोई जीवन दाता का हक किसी वृक्ष, नदी, सूर्य अथवा महापुरुष आदि को दे वह घृणित क्यों न होगा। पवित्र कुरआन ने तो ऐसों के विषय में स्पष्ट घोषित किया है कि वह बिना तौबा (पाश्चाताप) मर गया तो उस की नजात (मोक्ष) नहीं।

सोचिये यह धरती किस ने

बनाई? इस पर अनाज किस ने उगाया? हम ने अनाज खाया, हमारे शरीर में जो अनाज से रक्त बनने की व्यवस्था है वह कौन करता है? रक्त बन जाने के पश्चात नसों में उस के संचालन की प्रक्रिया कौन करता है? इसी प्रकार के प्रश्न बनाते चले जाइये क्या इन सब का एक ही उत्तर "अल्लाह" (ईश्वर) नहीं है? फिर हमारी मत क्यों मारी गयी कि हम गैरुल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त) को आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला, आजीविका देने वाला, सन्तान देने वाला, रोग दूर करने वाला, समझने लगे तथा दूसरों के सामने झुकने लगे। हम ईश्वर से तुरन्त क्षमा याचना करते हुए सत्य मार्ग दिखाने तथा उस पर दृढ़ रहने का सामर्थ्य मांगे।

ईश्वर ने हमारी आस्था तथा जीवन यापन के लिये नियम बनाए हैं, वह नियम हम को अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा मिल चुके तथा पूर्णतया सुरक्षित हैं न उन में कटौती की जा सकती है न कुछ बढ़ाया जा सकता है। बढ़ाना बिदअत, घटाना मुसीबत, अंगूर हलाल, उसकी नबीज़ हलाल लेकिन उसी को बढ़ा कर और सड़ा दिया तो शराब बन कर हराम हो गई, हमारी बहनों ने जो वस्त्रों में कटौती की तो समाज में फित्ना बन गया।

पवित्र कुर्आन में अंकित है कि एक समय अल्लाह ने मानव की समस्त आत्माओं को जमा कर के पूछा था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब बोले थे क्यों नहीं। परन्तु यह इकरार (अंगीकार) हम भूल गये और दूसरों को रब समझने लगे। अल्लाह ने हमारे पथ प्रदर्शन के लिये जो पैगम्बर भेजे तो हर पैगम्बर (सन्देष्टा) ने यही सन्देश पहुंचाया कि केवल एक खुदा (ईश्वर) की उपासना करो। हर संस्था का एक सिलेबस होता है, यह पैगम्बर लोग मानवता का सिलेबस लाते रहे हैं, और अन्त में अन्तिम सन्देष्टा द्वारा जो सिलेबस आया वह पूर्णतया सुरक्षित भी है तथा सरलता पूर्वक उपलब्ध भी। प्रिय देश भ्राताओ! हो सकता है आप को झिझक हो कि हजरत मुहम्मद साहिब तो मुसलमानों के हैं हम उन की शिक्षाएं कैसे लें? परन्तु यह आप का भ्रम है, मन जब एक सत्य की पुष्टि कर रहा है तो उसे मान लेनेही में भला है। मुहम्मद (सल्ल०) तो समस्त मानव के हैं।

पहला पुरुष "आदम (अ०)" पैगम्बर भी थे, पैगम्बरी का यह सिलसिला चलता रहा हर काल तथा हर क्षेत्र में पैगम्बर आते रहे, समयानुकूल नियमों में बदलाव होता रहा परन्तु अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद के आ जाने के पश्चात दीन मुकम्मल होने की घोषणा हो गई। अब न कोई नया दीन (धर्म) आएगा न कोई नया नबी अतः अब आखिरत की जिन्दगी में जहन्नम की आग से नजात के लिये हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाना और उन का अनुकरण करना अनिवार्य है।

अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वर्णन सभी ईश ग्रन्थों में था परन्तु शैतान के बहकाने से पिछले लोगों ने उसे छुपा दिया। हिन्दू धर्म तो वास्तव में सनातन धर्म है जो वेदों पर आधारित है, यदि यह वैद ईश ग्रन्थ हैं तो इन में भी अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उल्लेख अवश्य रहा होगा कुछ विद्वान वेदों में, कुछ स्थानों पर संकेत करते हैं कि इस से हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही मुराद (अपेक्षित) हैं। जो भी हो वेदों में आप का उल्लेख हो या मिटा दिया गया हो, इस के स्पष्ट तर्क विद्यमान हैं कि हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा (नबी) हैं। और अब आप के अनुकरण के बिना खुदा (ईश्वर) को प्रसन्न नहीं किया जा सकता तथा जहन्नम की आग से छुटकारा नहीं पाया जा सकता।

फिर मैं कहती हूं, अल्लाह के अलावा किसी और का सजदा दीवार बनाता हैं, अल्लाह और बन्दे के बीच, जो लोग अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान ला चुके हैं और गैरुल्लाह को सजदा करते हैं वह भी खुदा के प्रकोप के भागीदार हैं। प्रिय बन्धुओ! अब आप देर न करें किसी भी समय अन्तिम यात्रा आरंभ हो सकती है, उस यात्रा का टिकट आवश्यक है, उस यात्रा का टिकट है अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान उनको अन्तिम सन्देष्टा मानना यदि यह टिकट न हुआ तथा उनका अनुकरण न हुआ तो वहां के कारागार से छुटकारा असम्भव है।

पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को कुबूल करके जो नूर मिलेगा उससे, मुक्ति प्राप्ति की सारी रूकावटें खत्म हो जायेंगी, सारे रास्ते खुल जायेंगे, सारे मकसद मिल जाएंगे। आप सभी सदा के लिये मुक्त पा जायेगे।

आप लोगों की ये बात अच्छी है कि जो बात दिल को छू जाए या

गवारा करे वही काम करते हैं, यानी दिल के अन्दर में जो बात आती है उसे मानते हैं बस। लेकिन आप ये भी जानते है कि जब कोई परीक्षा देना होती है तो ये फिक्र रहती है कि सेलेबस में क्या है फिर भले ही कोई टापिक पसन्द न आए उसे पढ़ते हैं यूं लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि हम इसे छोड़ दें और ज्यदा नम्बर का सवाल इसी में से पूछ लिया जाए।

जब बीमार होते हैं तो ये देखते हैं कि डॉक्टर ने पर्चे पर क्या लिखा है भले ही दवा कड़वी लगे लेकिन खाना पड़ती है क्योंकि यहां सेहत का मामला है।

जब मौत का फरिश्ता हमारे सामने आ पहुंचेगा तब हम ये नहीं कह सकेंगे कि अभी हमारा दिल गवारा नहीं करे रहा अभी अंदर से नहीं आ रहा है अभी हम तुम्हारे साथ नहीं चल सकते उस समय न किसी से मदद मांग सकेंगे न इजाज़त।

डिग्री के मामले में सिलेबस की बात मानते हैं।

सेहत के मामले में डाक्टर का पर्चा महत्वपूर्ण होता है यानी यहां पर भी दिल की नहीं दिमाग की बात मानी जाती है।

अपने मालिक की खुशी के लिये जो रास्ता है वो आपके हाथ में पहुंच चुका है, आप ऊपर वाले की खुशी के लिये बुद्धि की बातें मानेंगे या अंदर से आवाज आने का इन्तेजार करेंगे?

याद रखिये हर जानदार चीज को मौत का मजा चखना है। जिन्दगी और मौत के बीच एक सांस की दूरी है। जब हम समझते हैं कि फ़लां शख्स मर गया तब हकीकत में उसकी जिन्दगी शुरू होती है।

आप अपने मालिक से वादा करके आए हैं कि "आप हमारे रब हैं" दुनिया में भी आप ही हमारे रब होंगे।"जैसे ही आपकी सांस टूटेगी सबसे पहला सुवाल आपसे पूछा जाएगा कि "तुम्हारा रब कौन"? किस–किस का नाम लेंगे आप. तब आपके हाथ में अपनी गलती सुधारने का मौका नहीं बचेगा।

गुजरे कल में जो गलती हुई है उसे आज सुधार लीजिए आने वाला कल क्या लाएगा कुछ खबर नहीं।

(पृष्ठ ३५ का शेष)

कि इसे स्वीकार करो और इसके बदले बटवारे में हमारा हिस्सा बढ़ा दो। ये सुनकर हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रजि०) ने कहा कि "ऐ यहूदियो ! खुदा की कसम! तुम अल्लाह की सारी मखलूक (सृष्टि) में मेरे निकट लानत व मलामत वाले हो लेकिन ये मुझे तुम पर अत्याचार करने पर उभार नहीं सकता और जो तुमने घूस देने की पेशकश की है वह हराम है और हम (मुसलमान) उसको नहीं खाते" यहूदियों ने उनकी बात सुनकर कहा कि "यही वह (न्याय) है जिस से जमीन व आसमान का अस्तित्व है।" (मुवत्ता इमाम मालिक रह०)

इस लिये हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने शासकों को प्रजा से भेंट और तोहफा स्वीकार करने से मना किया है। (अबू दाऊद) एक बार एक आमिल (अधिकारी) ने आकर कहा कि ये सदका का माल है और ये मुझे उपहार में मिला है। ये सुनकर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने खड़े होकर सम्बोधित किया और हम्द व सना (अल्लाह की बड़ाई) के बाद कहा "आमिल (अधिकारी) का क्या हाल है कि हम उसको भेजते हैं तो आकर कहता है कि ये तुम्हारा है और ये मेरा है। वह अपने मां या बाप के घर में बैठ कर नहीं देखता कि उसको उपहार मिलते हैं या नहीं। कसम है उस जात की जिसके हाथ में मेरी जान है वह उसमें से जो ले जाएगा वह कियामत (प्रलय) में अपनी गर्दन पर लाद कर लाएगा, ऊंट, गायें, बकरी जो हो। फिर आप (सल्ल०) ने अपने दोनों हाथ उठा कर तीन बार कहा खुदावन्दा! मैंने पहुंचा दिया (बुखारी) इन बातों में आपने जो कुछ कहा वह गुलूल वाली आयत की व्याख्या है।

आंखों देखी जहालत

वकील साहब लपकते हुए अदालत के कमरे से बाहर निकले, दरवाजे की बगल में जोर से नाक साफ की और लिथड़ी हुई उंगलियां वहीं दीवार पर रगड़ दीं।

होटल के कमरे से तैयार होकर निकलते हुए दौरे पर आये बड़े साहब ने अपने जूते निस्संकोच भाव से पलंग की चादर से पोंछ लिए।

रेलवे रिजर्वेशन खिड़की से एक सुट–बूटधारी ने एक फार्म उठाया। फिर, इधर–उधर चोर निगाहों से देखकर पूरी गड्डी उठाकर अपने बैग में डाल ली।

और मैं देखता ही रह गया इन पढ़े–लिखे जाहिलों को।

ओम प्रकाश बजाज
बी–२, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर – ४८२००१

घूस

सय्यिद सुलैमान नदवी
अनुवादक : नज्मुस्साकिब

किसी के धन से अनैतिक ढंग से फायदा उठाने की एक आम सूरत घूस है। घूस का अर्थ ये है कि कोई अपनी स्वार्थी सोच को पूरा करने के लिये भ्रष्टाचारी व्यक्ति को कुछ देकर अपने अन्तर्गत कर ले।

पहले अरब के ज्योतिषी ढोंग की बुनियाद पर मुकदमों के फैसले करते थे। उद्देश्यवादी व्यक्ति उसको मजदूरी या रिश्वत (घूस) के तौर पर कुछ नजराना (दक्षिणा) देता था। उसको मिठाई कहा जाता था। इस्लाम आया तो झूटी सोच और बुद्धू बनाने वाला ये विभाग ही समाप्त हो गया। इस पर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने बड़े कठोर शब्द कहे हैं।

अरब देशों में यहूदियों के मुकदमों के फैसले सन्यासी और धनी करते थे चूंकि धन–दौलत ने उनको कई वर्गों में बांट दिया था इस लिये वह कानून का बेजा इस्तेमाल करने के लिये हर समय ख्वाहिशमन्द (आकांक्षी) रहते थे। कानून की पकड़ से बचने के लिये खुलेआम घूस देते थे और उनके ज्योतिष व न्यायधिकारी (जज) भी खुले आम घूस लेते थे। एक का अधिकार दूसरे को दिलाते थे और उसके माध्यम से तौरात (यहूदियों की धार्मिक पुस्तक) में जो कानूनी आदेश थे उसमें अपनी मर्जी और सहूलियत के अनुसार हेरफेर कर दिया करते थे। अतः तौरात के कानून में फेर बदल का सबसे बड़ा कारण यही घूस खोरी था। कुरआन में इस बुराई को बयान किया गया है अनुवाद ! अल्लाह ने किताब में जो उतारा उसको छुपाते हैं और उसके द्वारा मामूली मुआवजा हासिल करते हैं, वह अपने पेटों में आग भरते हैं। खुदा उनसे कियामत (प्रलय) के दिन बात न करेगा, न उनको पाक साफ करेगा और उनके लिये कठोर दंड है।" (कुरआन सूरह बकरः १७४)

पेट में आग भरना इसलिये कहा कि यहूदी दुनिया के इस मामूली लालच में आकर खुदा के आदेशों में फेरबदल और अल्लाह की मंशा में हेरफेर पेट ही के लिये करते थे इस लिये यही दंड उनको मिलेगा। इब्ने जरीर ने इस आयत की व्याख्या में कहा है कि यहूदी धनी अपने धार्मिक विद्वानों को इस लिये घूस देते थे कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जो गुण विशेषताएं तौरात में हैं वह आम लोगों को न बताएं लेकिन कुरआन से ये बात मालूम होती है कि वह अल्लाह के आदेशों में आम तौर से हेरफेर करते थे। उसके माध्यम से दुन्या की दौलत कमाते थे। अतः कुरआन में उनकी उस हराम खोरी का बयान (वर्णन) दो बार है । अनुवाद : और तुम उनमें से बहुतों को देखोगे कि वह गुनाह (पाप) की अधिकता और हराम खाने पर जोर देते हैं क्या ही बुरे काम हैं जो वह करते हैं, उनके सन्यासी और धार्मिक विद्वान उनको गलत बात कहने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? कितना ही बुरा काम है जो वह करते हैं। (कुरआन सुरह माइदह : ६) एक और जगह है कि (अनुवाद) झूट के बड़े सुनने वाले और हराम को बड़े खाने वाले (कुरआन सूरह माइदः ६) कुरआन की एक और आयत सुनाने के काबिल है अनुवादः और आपस में एक दूसरे का माल (धन) अनैतिक ढंग से न खाओ और न माल को शासकों तक पहुंचाओ कि लोगों के माल का कुछ अंश पाप द्वारा खा जाओ और तुम जानते हो" (कुरआन सुरह बकरहः १८८) ये आयत अपने अर्थ के अनुसार घूस लेने से पूरी तरह रोकती है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने घूस लेने और देने वाले दोनों पर लानत (भर्त्सना) की है। (अबुदाऊद) घूस देनेवाले के बारे में कहा गया है कि वह अपराध की सहायता करना है और अपराध की सहायता कानून और नैतिकता दोनों में निषेध है।

खैबर (सऊदी अरब) के यहूदियों से आधे–आधे बटवारे पर खेती में समझौता हुआ था। जब पैदावार के बटवारे का समय आता तो हजरत मुहम्मद सल्ल० हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रजि०) को भेजते। वह ईमानदारी से पेदावार के दो हिस्से कर देते और कह देते इन दो में से जो चाहो ले लो। यहूदियों ने अपनी बुरी परम्परा के अनुसार उनको भी घूसदेना चाहा। आपस में चन्दा करके अपनी औरतों के आभूषणों को इकट्ठा किया और कहा

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

तस्वीर का दूसरा रुख़

वहीद अशरफ मेरठी

एक जमाना वह था जब फख (गर्व) से कहा जाता था कि मेरी लड़की कुरआन शरीफ पढ़ी हुई है। यह बड़ी बात थी जब किसी घराने की बहू बनी तो ससुराल वाले फख (गर्व) से कहते हमारी बहू कुरआन शरीफ पढ़ी हुई है। जमाने ने कुछ तरक्की की अब उर्दू की जरूरी तअलीम जो सिर्फ खत लिखने और पढ़ने तक महदूद (सीमित) थी वह भी गिनती की चन्द लड़कियां ही इस जरूरी तअलीम में शुमार की जाती थीं।

हालात ने करवट ली तो कुछ लड़कियां परदे में महल्ले के प्राइमरी स्कूलों में जाने लगीं किसी ने दो किसी ने तीन किलासें पढ़ीं और जिसने दर्जा पांच पास किया वह अपने घराने की सबसे ज्यादा तालीम याफता (शिक्षित) लड़की कहलाई, यह सिलसिला आगे बढ़ा तो मिडिल तक नौबत पहुंची फिर हाई स्कूल कर लेना बड़े फख (गर्व) की बात हुई, अब लड़कियों की तअलीम की तरफ ध्यान दिया जाने लगा, वह भी थोड़े घरानों में कुछ इन्टर हुईं कुछ ने बी०ए० किया और कुछ ने एम०ए० किया, यह भी ध्यान में रखिये कि अब तक सिर्फ आर्ट साइड के सबजेक्ट ही तअलीम का जरिया (साधन) बने थे, साइंस और कामर्स बहुत दूर, इसके बाद साइंस में डिग्रियां हासिल कीं, दूसरे कोर्सेज भी किये, डाक्टरियट की डिग्री भी ली, अल्लाह का बड़ा इनआम है कि आज तअलीम की हर ब्रांच में लड़कियां तअलीम हासिल कर रही हैं, कामर्स जैसे खुश्क मजामीन (सब्जेक्ट) से छेड़ छाड़ की।

ऐसे कोरसेज भी कर रही हैं जहां उसमें तअलीम के दौरान (बीच) ही कंपनियों की तरफ से अच्छी माहाना (मासिक) रकम पर आफर भी दे दिया जाता है या क़ोर्स खत्म करने पर लाखों का सालाना पैकेज भी दिया जाता है, मैं लड़कियों की ऊंची तअलीम का मुखालिफ नहीं, लेकिन तस्वीर के दूसरे रूख से मुतमइन (सन्तुष्ट) नहीं हो पाता, हो सकता है मेरे सोचने का तरीका गलत हो, मेरे कहने का मतलब यह है कि बीच का रास्ता तअलीम और नौकरी में अपनाया जाए, ऐसे कोरसेज लड़कियों को कराए जाएं जो उनके लिये मुनासिब (उचित) हों, दुनिया भी बनी रहे और दीन भी हाथ से न जाए, नौकरी के लिये ऐसे विभागों का चयन किया जाए जहां अनुचित हालात से सुरक्षित रहा जा सके, इस दौड़ में हिस्सा लेना कि फुलां लड़की ने यह किया मैं अपनी लड़की को यही कराऊंगा, यह जिद अच्छी नहीं है, तअलीम जरूर दिलवाएं लेकिन हद में। अगर हद से बाहर का माअमला होगा और दौलत का हासिल करना ही जिन्दगी का मकसद रहा तो भविष्य में ऐसी समस्याएं होंगी जिनसे नजात हासिल करना मुश्किल होगा। अभी ऐसी तअलीम और ऐसे कोरसेस की शुरूआत है जब यह अपने उरूज (उत्थान) पर होगा और उस के नजाएज परिणाम सामने आयेंगे तब क्या होगा? इन मसाएल (समस्याओं) पर गौर करना भी जरूरी है।

एक गीत

सोने रूपे के ये धारे
डूबे इनके लोभी सारे,
बचकर रहना तुम हे प्यारे,
दुनिया मायाजाल,
हे प्यारे, दुनिया मायाजाल।
ईश–प्रेम से मन को भर लें,
माता–पिता की सेवा कर लें
पीड़ित जनता के दुख हर लें
हो जाएं खुशहाल
हे प्यारे, दुनिया मायाजाल।

सत्य धर्म यदि जनता पाए
देश शक्तिशाली बन जाए
जनता का दुख सब कट जाए
आए फिर न अकाल,
हे प्यारे, दुनिया मायाजाल।
ईश्वर की हम अनुमति पाएँ
सेवक बनकर राज चलाएँ
नित्य देश को स्वर्ग बनाएँ
होकर मालामाल,
हे प्यारे, दुनिया मायाजल।

किस्त छः

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तअख़्ख़ुर	पीछे होना	तबाही	विनाश	तजम्मुल	श्रृंगार
ताख़ीर	देर	तबह़हुर	निपुणता	तजवीज़	प्रस्ताव
तारीकी	अंधेरा	तब्दीली	परिवर्तन	तजवीद	शुद्धोच्चारण
तारे बर्क़ी	विद्युत समाचार	तबस्सुम	मुस्कान	तह़त	अंतर्गत
तारकश	तार बनाने वाला	तबसिरा	आलोचना	तह़तुस्सरा	पाताल
ताज़ा	नवीन, प्रफुल्ल	तबर्रा	अप्रसन्नता	तह़रीफ़	परिवर्तन
ताज़गी	प्रफुल्लता	तबर्रा करना	बुरा कहना	तह़रीक	आन्दोलन
ताज़ियाना	कोड़ा	तब्लीग़	प्रचार	तह़फ़्फ़ुज़	सुरक्षा
तअस्सुफ़	खेद	तप	ज्वर	तह़सीन	प्रशंसा
तालीफ़	संग्रह, रचना	तपिश	ताप	तह़सील	प्राप्ति
ताम	संपूर्ण	तपेदिक़	क्षय रोग	तुह़फ़ा	उपहार
तअम्मुल	संकोच	तस्निया	द्विवचन	तह़क़ीर	तिरस्कार
तानीस	स्त्रीलिंग	ततिम्मः	पूरक	तह़क़ीक़	अनुसंधान
तासीस	आधार शिला रखना	तिजारती	व्यापारिक	तह़क़ीक़ात	निरीक्षण
तावान	क्षतिपूर्ति	तजावुज़	उल्लंघन	तख़य्युल	कल्पना
ताहम	तथापि	तजाहुल	अज्ञानता	तदब्बुर	विचार
ताईद	समर्थन	तजरिबा	अनुभव	तदारूक	निवारण
तबादला	स्थानान्तरण	तजज़िया	विश्लेषण	तदरीस	पाठन
तबाह	नष्ट	तजस्सुस	अन्वेषण	तरद्दुद	शंका
तबाहकुन	नष्टकारी	तजल्ली	आलोक	तर्दीद	खण्डन

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : रमज़ान के रोज़े किन लोगों पर फ़र्ज़ हैं?

उत्तर : रमज़ान के रोज़े हर आक़िल(बुद्धिमान) बालिग़ (व्यस्क) तन्दुरुस्त (स्वस्थ) मुक़ीम मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ हैं (परन्तु मुसाफ़िर को अपने छूटे रोज़े पूरे करने होंगे)।

प्रश्न : क्या नाबालिग़ बच्चों पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं हैं?

उत्तर : हां नाबालिग़ बच्चों और मजनून पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं हैं?

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : तीन क़िस्म के आदमी मरफ़ूउ़लक़लम (वह जिन के कर्म नहीं लिखे जाते) हैं एक मजनून यहां तक कि उस का जुनून (पागल पन) दूर हो जाए, दूसरा सोने वाला यहां तक कि वह जाग जाए, तीसरा बच्चा यहां तक कि वह बालिग़ हो जाए। (अ़हमद अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फ़िक़्हुस्सुन्नः)

नाबालिग़ बच्चों पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं लेकिन अन्दाज़ा लगाया जाए जो बच्चे रोज़े रख सकते हैं उन से रोज़े रखवाएं सवाब मिलेगा और आदत बनेगी जब बालिग़ हो जाएंगे तो रोज़ा छोड़ने के गुनाह में मुब्तला न होंगे।

रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले जब आ़शूरा के रोज़े की बड़ी अहम्मीयत थी तो सह़ाब–ए–किराम नाबालिग़ बच्चों से भी रोज़ा रखवाते थे। इस तरह बच्चों से रोज़े रखवाने का सुबूत मौजूद है।

प्रश्न : बूढ़ों के लिये रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर : ऐसे बूढ़े जो रोज़े रखने की ताक़त न रखते हों रोज़े न रखें जैसा कि फ़िक़्ह की किताबों में लिखा है। (बिदायतुल मुजतहिद १:२०२)

मगर वह फ़िदया अदा करें।

प्रश्न : फ़िदया क्या है? बताएं, जो शख़्य फ़िदया नहीं अदा कर सकता उस के लिये क्या हुक्म है?

उत्तर : फ़िदये का मतलब है एक रोज़े के बदले में किसी ग़रीब मुसलमान को दोनों वक़्त खाना खिलाना, इफ़्तार के वक़्त इफ़्तार करा के खाना खिला दें, फिर सह़री खिला दें, या एक रोज़े के बदले में मिस्कीन को फ़ित्रे के बराबर गेहूं या उसकी क़ीमत मिस्कीन को अदा करें। जो बूढ़ा शख़्स खुद मिस्कीन हो अल्लाह तआला उसे मुआफ फरमाएंगे।

प्रश्न : फ़ित्रा क्या है और उसकी मिक़्दार (मात्रा) क्या है?

उत्तर : जो शख़्स साहिबे निसाब हो या साहिबे निसाब तो न हो मगर उसके घर में ग़ल्ला वग़ैरह काफ़ी हो तो ऐसे शख़्स पर ईद के रोज़ की नमाज़ से पहले अपनी तरफ़ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से फ़ित्रा अदा करना वाजिब है, फ़ित्रे की मिक़्दार एक साअ़ जौ अर्थात २७३ तोला (३ किलो १८५ ग्राम) या आधा साअ़ गेहूं (एक किलो ५६३ ग्राम) ग़रीब मुसलमान को दें, या इन में से किसी ग़ल्ले की क़ीमत दें। फ़ित्रा वक्त से पहले रमज़ान में भी अदा किया जा सकता है। साअ़ एक अ़रबी नाप है उस की तौल आंकने में मतभेद हुआ है यहां जो ज़ियादा मशहूर है वह लिखा गया।

प्रश्न : निसाब क्या होता है?

उत्तर : किसी शख़्स के पास जितना माल होने पर ज़कात फ़र्ज़ होती है उस को ज़कात का निसाब कहते हैं। ह़दीसों से साबित है कि २०० दिर्हम चान्दी का और २० मिस्क़ाल सोने का निसाब है। यहां की तौल के ह़िसाब से इन की बराबरी करने में इख़्तिलाफ़ हुआ है जो तौल आ़म तौर से राइज है वह चान्दी का निसाब ५२ तोला ६ माशा अर्थात ६१२ ग्राम लगभग और सोने का निसाब साढ़े सात तोला अर्थात ८७ ग्राम लगभग।

प्रश्न : एअ़तिकाफ़ का क्या हुक्म है?

उत्तर : मसजिदें अल्लाह की इ़बादत के लिये हैं, किसी भी मस्जिद में दाख़िल हों तो एअ़तिकाफ़ की नीयत कर लें तो जब तक मस्जिद में रहेंगे सवाब मिलेगा यह नफ़्ली एअ़तिकाफ़ है। रमज़ान के आख़िरी अ़शरे में अर्थात २० रमज़ान की शाम को एअ़तिकाफ़ की नीयत से मस्जिद में दाख़िल होना और बिना शरअ़ी ज़रूरत के ईद का चान्द दिखने तक मस्जिद ही में क़ियाम करने को रमज़ान के आख़िरी अ़शरे का एअ़तिकाफ कहते है यह सुन्नत अ़लल किफ़ाया है अर्थात हर बस्ती की मस्जिद में किसी न किसी का एअ़तिकाफ़ करना सुन्नत है अगर कोई भी एअ़तिकाफ़ न करेगा तो बस्ती वालों पर सुन्नत छोड़ने का वबाल आएगा।

प्रश्न : वह कौन सी जरूरतें हैं जिस के लिये मुअ़तकफ़ (एअ़तिकाफ़ की जगह) से निकला जा सकता है?

उत्तर : इस पर इजमाअ़ है कि मुअ़तकिफ़ (एअ़तिकाफ़ करने वाला) के लिये पाख़ाना पेशाब के लिये मस्जिद से निकलना और अपने घर में दाख़िल होना जाइज़ है।

ह़ज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मुअ़तकिफ़ (इअ़तिकाफ करने वाला) होते तो इन्सानी ज़रूरत के सिवा आप किसी ज़रूरत से घर में दाख़िल न होते थे। (बुख़ारी, मुस्लिम, अह़मद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्नि माजा, फिक़्हुस्सुन्नः)

प्रश्न : तरावीह् की नमाज़ के बारे में बताएं।

उत्तर : अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने रमज़ान में नमाज़ इ़शा के फ़र्ज़ों और दो सुन्नतों के पश्चात जमाअ़त से नमाज़ पढ़ाई दूसरे रोज़ मजमअ़ बढ़ गया, तीसरे या चौथे रोज़ जब मजमअ़ काफ़ी ज़ियादा हो गया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हुजरे से नहीं निकले और पूछने पर बताया कि मुझे अन्देशा हुआ कि कहीं उम्मत पर यह फ़र्ज़ न हो जाए इस लिये नहीं निकला बस सहाबा अलग–अलग तरावीह् की नमाज़ पढ़ते रहे। किसी सह़ीह् रिवायत से वाज़ेह् तौर पर साबित न हो सका कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कितनी रकअ़तें पढ़ीं थीं और सह़ाबा (रज़ि०) कितनी रकअ़तें पढ़ते थे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में इसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तरह़ फिर एक इमाम के पीछे पढ़ने का नज़्म फ़रमा दिया और ख़ुलफाए राशिदीन का तरीक़ा एक ह़दीस के मुताबिक़ हुज़ूर ही का तरीक़ा समझा जाता है, लेकिन रकअ़तों में फिर इख़्तिलाफ़ हुआ, ह़ज़रत उ़मर से मन्सूब चार रिवायतों में से एक से वित्र के साथ ११ रकअ़त दूसरी से इक्कीस रकअ़त, तीसरी से तेरह रकआ़त और चौथी से तेइस रकआ़त वित्र के साथ साबित है।

इस के बअद जियादातर २० रकअ़तों का रिवाज रहा, बअ़ज़ दूसरे सहाबा और ताबईन से १६, २४, २८, ३४, ३६ और चालीस रकअ़तें (वित्र के अ़लावा) पढ़ने की भी रिवायतें मिलती हैं। (देखे फिक़्हुस्सुन्नः उर्दू पृष्ठ १६४)

अहम यह है कि तरावीह् जमाअ़त से हो, दूसरी अहम बात है कि अगर आसानी से मुम्किन हो तो हर मस्जिद में कुर्आन के ख़त्म का एहतिमाम हो, रहीं रकआ़त तो जहां लोग २० पढ़ते हैं, आठ वालों को चाहिए कि वहां कम कराने की कोशिश न करें।

(पृष्ठ ४० का शेष)

३२ लोगों की मौत हुई जबकि २००६–०७ में ये संख्या कम थी और ११ लोगों को हिरासत में अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। ग़ौरतलब है कि एक तरफ़ जहां समाज और तंत्र के आधुनिक होने का ढोल पीटा जाता है, वहीं दूसरी ओर सरकार अपने आंकड़े में ख़ुद यह स्वीकार करती है कि पहले की तुलना में पुलिस पहले से अधिक क्रूर और बर्बर हुई है।

हमारी सरकार का कहना है कि उसके मानवाधिकार का रिकार्ड अन्य कई देशों की तुलना में बहुत अच्छा है लेकिन मानवाधिकार कार्यकर्ता समय–समय पर सवाल उठाते रहे हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने भी फर्जी मुठभेड़ के मामले को लेकर कई बार सरकार को आड़े हाथों लिया है। वह चाहे कश्मीर में लापता लोगों का मामला हो या जेलों में बंद विचाराधीन कैदियों की स्थिति हो। जेलों में बंद महिलाओं की स्थिति भी कई गैर–सरकारी संगठनों के लिए चिन्ता का विषय बनी रहती है।

मई १९८७ में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में सांप्रदायिक दंगे भड़कने के बाद २२ मई को वहां के हाशिमपुरा मोहल्ले के ६०० से ज्यदा मुसलमानों को उत्तर प्रदेश पीएसी के जवानों ने हिरासत में लिया था, लेकिन उनमें से ४२ लोग इतने बरस बीत जाने के बाद आज तक वापस नहीं लौटे।

मेरठ में हुए हत्याकांड के बाद सीआईडी की क्राइम ब्रांच ने १९८८ में जांच का काम शुरू किया था। मई १९९६ में गाजियाबाद के न्यायिक मजिस्ट्रेट के पास १६ पीएसी जवानों के खिलाफ चार्जशीट दायर हुई, पर वर्ष २००० तक कोई भी अभियुक्त मजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं हुआ। प्रशासनिक उदासीनता की स्थिति यह है कि इस मामले में मुकदमा शुरू होने में ही १६ बरस लग गए और इस दौरान जिन १६ पीएसी जवानों को इस मामले में अभियुक्त बनाया गया, उनमें से १६ ही जीवित बताए जा रहे हैं। जमीनी हकीकत यह है कि १६ में से तीन जवानों की मौत हो गई है, एक रिटायर हो गया है, एक ने इस्तीफा दे दिया है, छह उत्तर प्रदेश पुलिस और एक उत्तराखंड पुलिस में शामिल हो गए, सात के बारे में कोई जानकारी नहीं है। देश में हुए हजारों फर्जी मामलों की तकरीबन यह स्थिति है–ऐसा सरकारी आंकड़ों से भी लगता है। ऐसे में अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी पुलिस किस तरीके से इस देश और देश के मासूम नागरिकों की सुरक्षा करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

सितम्बर तक शादी नहीं तो नौकरी ख़त्म

तेहरान । ईरान की एक प्रमुख सरकारी कम्पनी ने अपने अविवाहित कर्मचारियों को चेतावनी दी है कि उन्होंने सितम्बर तक विवाह नहीं किया तो उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा।

एक दैनिक अखबार के अनुसार देश के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित एक कंपनी ने अपने अविवाहित कर्मचारियों से परिवार बढ़ाने को कहा है। यह कंपनी ईरान की गैस और पेट्रो रसायन सुविधाओं से जुड़ा कार्य करती है। कंपनी के अनुसार विवाहित होना कंपनी के रोजगार संबंधी मापदण्डों में से एक है। उसने कहा है, हम आखिरी बार यह घोषणा कर रहे हैं कि सभी महिला और पुरूषों को २१ सितम्बर तक इस महत्वपूर्ण और नैतिक कर्तव्य का निर्वहन कर लेना चाहिए। अन्यथा उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। कंपनी के सुरक्षा प्रमुख के हस्ताक्षर वाले निर्देश के अनुसार अनुबंधित कर्मचारी अगर अविवाहित पाए जाते हैं तो उन्हें २२ अक्टूबर तक हटा दिया जाएगा। ईरान में अविवाहित संबंध नाजायज है।

नरगिस के बाद अब कहर बरपाएगा आबे

नई दिल्ली, आखिर म्यांमार में मौत और विनाश का मंजर दिखने वाले भयानक तूफान का नाम नरगिस जैसा नर्मो नाजुक क्यों हैं शायद पाकिस्तान के पास इसका जवाब है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के निर्देशक बीपी यादव ने बताया कि पाकिस्तान ने भारतीय मौसम विभाग को इस तूफान के लिये नरगिस नाम सुझाया था।

विभाग क्षेत्रीय विशेषज्ञता वाला मौसम केन्द्र है। आईएमडी सात देशों–बंगलादेश, मालदीप, म्यांमार, ओमान; पाकिस्तान, थाईलैण्ड और भारत के साथ–साथ श्रीलंका को मौसम के बारे में परामर्श देता है। यह विभाग इन देशों से तूफानों के नामों को भी सुझाने के लिये कहता है। इसके बाद इन नामों को सदस्य देशों के नामों के क्रम के अनुसार व्यवस्थित कर दिया जाता है।

अगला तूफान आबे होगा जिसके लिए श्रीलंका ने नाम सुझाया है इसके बाद आने वाले तूफान का नाम खाई मुक होगा जिसके लिये थाईलैंड ने नाम सुझाया है। इससे पहले के छह तूफान ओगनी (बंगलादेश), आकाश (भारत), गोनू (मालदीव), येमयिन (म्यांमार), सिद्र (ओमान) और नरगिस (पास्तिान) आ चुके हैं।

तूफानों के नाम रखने की परम्परा २०वीं सदी की शुरूआत से मानी जाती है। जब मौसम के बारे में भविष्यवाणी करनेवाले एक आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक ने तूफानों के नाम उन राजनेताओं के नाम पर रख दिए जिन्हें वह नापसंद करता था। अमेरिका ने १६५३ में तूफानों के नाम रखने की शुरूआत की जबकि उपमहाद्वीप में इसकी शुरूआत २००४ में हुई।

यादव ने कहा कि तुफानों के

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

नाम रखने से मौसम की भविष्यवाणी करने वालों को एक ही समय के दौरान अलग–अलग बेसिन में सक्रिय तूफानों को लेकर भ्रम नही होता। हर साल विशेष तौर पर विनाशकारी तूफानों के नामों को बदल दिया जाता है और उनकी जगह नए नामों का चुनाव कर लिया जाता है।

फर्जी मुठभेड़ के बढ़ते मामले

देश और समाज की सुरक्षा के नाम पर अपराधियों को फर्जी मुठभेड़ में मारने की संख्या जिस अनुपात में बढ़ रही हैं, पुलिस व्यवस्था के साथ–साथ हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली पर भी बड़ा सवालिया निशान लगाती है।

कशमीरी लोग एक लंबे अरसे से मुठभेड़ में मरनेवाले लोगों के आपराधिक इतिहास की जांच के साथ–साथ गलत पहचान को मुद्दा बनाकर जांच और कार्रवाई की मांग करते रहे हैं।

हाल ही में जारी फर्जी मुठभेड़ से संबंधित सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत में वर्ष २००७–०८ में पुलिस हिरासत के दौरान १८८ लोगों की मौत हुई है। इसमें सबसे अधिक मौतें उत्तर भारत और महाराष्ट्र में हुई हैं। आंकड़ों के अनुसार २००६–०७ की तुलना में इस साल ७० मौतें अधिक हुई। जबकि वर्ष २००५–०६ और २००४–०५ में भारत में हिरासत में १३६ और १३६ मौतें हुई थीं। उत्तर प्रदेश में २००७–०८ के दौरान

(शेष पृष्ठ ३६ पर)